शनिवार

07 नवम्बर 2026

- देहरादून
- वर्ष 34
- अंक 286
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

'जेनी' का 'जिन्न' एक बार फिर बोतल से बाहर



मेरे बेटे को पिता का नाम चाहिएः जेनी

हमारे संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में करीब 23 साल पुराने जेनी प्रकरण ने आज एक नया और बेहद गंभीर मोड़ ले लिया। वर्ष 2003 में तत्कालीन मंत्री डॉ. हरक सिंह रावत पर यौन शोषण और अपने बच्चे का पिता होने का आरोप लगाने वाली जेनी ने आज पत्रकार वार्ता कर अपनी आपबीती सुनाई। उन्होंने हरक सिंह रावत पर दुष्कर्म का सीधा आरोप लगाते हुए कहा कि उनका ऐसा शोषण हुआ, जैसा शायद किसी अन्य महिला के साथ नहीं हुआ होगा। उन्होंने दावा किया कि उन्हें मानसिक अस्पताल में रखा गया, जहां उनसे जबरन हस्ताक्षर कराए गए।

पत्रकार वार्ता में जेनी ने बताया कि जिस समय उन्हें मानसिक अस्पताल में रखा गया, उस दौरान उनकी मानसिक स्थिति बेहद खराब हो चुकी थी। उन्होंने आरोप लगाया कि सीबीआइ के अधिकारी उनसे मिलने केवल एक बार अस्पताल आए थे। उस समय वह पूरी तरह मानसिक रूप से टूट चुकी थीं। पत्रकार वार्ता में जेनी ने अपने 23 वर्षीय बेटे का जिक्र करते हुए कहा कि वह इतने वर्षों से पिता के नाम और पहचान के बिना जीवन बिता रहा है। उन्होंने कहा कि उनके बेटे को उसका नाम मिलना चाहिए। जेनी ने बेटे का डीएनए परीक्षण कराने की मांग भी उठाई। उनका कहना था कि इतने वर्षों से उनके बच्चे की पहचान को लेकर राजनीति होती रही, लेकिन किसी ने उसके भविष्य और अधिकारों की चिंता नहीं की।

उन्होंने हरक सिंह रावत पर दुष्कर्म का आरोप दोहराते हुए कहा कि उनके साथ हुए कथित शोषण के बाद उन्हें मानसिक और सामाजिक रूप से भी काफी प्रताड़ना झेलनी पड़ी। उन्होंने जबरन हस्ताक्षर कराए जाने का आरोप लगाते हुए पुराने घटनाक्रम की परिस्थितियों पर सवाल उठाए। जेनी के इन नए बयानों पर अब हरक सिंह रावत का पक्ष और उनके दावों के समर्थन में उपलब्ध साक्ष्य महत्वपूर्ण होंगे।

बता दें कि जेनी प्रकरण की शुरुआत वर्ष 2002 के आखिर में हुई थी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, असम की रहने वाली इंदिरा देवी उर्फ जेनी दिसंबर 2002 में देहरादून पहुंची थीं। उस समय उत्तराखंड में नारायण दत्त तिवारी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार थी और डॉ. हरक सिंह रावत राजस्व मंत्री थे।

जेनी ने आरोप लगाया था कि नौकरी दिलाने का भरोसा देकर उनके साथ शारीरिक संबंध बनाए गए और बाद में उन्हें सरकारी आवास में रखा गया। 15 जून 2003 को उन्होंने देहरादून के एक सरकारी अस्पताल में बच्चे को जन्म दिया। इसके बाद उन्होंने हरक सिंह रावत को बच्चे का पिता बताते हुए यौन शोषण का आरोप लगाया। 18 जून 2003 को यह मामला विधानसभा में गूंजा। विपक्ष ने सदन में सरकार को घेरा और मामले की निष्पक्ष जांच की मांग उठाई। विवाद बढ़ने के बीच हरक सिंह रावत ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने आरोपों को राजनीतिक साजिश बताया और कहा था कि जब तक वह बेदाग साबित नहीं होते, तब तक विधानसभा में प्रवेश नहीं करेंगे।

मंत्री रेखा आर्य का पति गिरफ्तार!

संवाददाता

देहरादून। मंत्री रेखा आर्य को फर्जी हस्ताक्षर एवं कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर चार कम्पनियों में निदेशक पद से हटाने के मामले में पुलिस ने पति को भतीजे संग गिरफ्तार कर लिया है।

आज यहां इसकी जानकारी देते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोबाल ने बताया कि 15 अक्टूबर को श्रीमती रेखा आर्य ने कोतवाली कैण्ट में लिखित तहरीर दी कि गिरधारह जाज साहु उर्फ पप्पू निवासी बरेली के द्वारा पूर्व मे विवाहित होने के पश्चात भी उनसे विवाह करने, उनके साथ गाली गलौच एवं मारपीट करते हुए जाति सूचक शब्दों का प्रयोग कर उन्हें अपमानित करने व कूटरचित हस्ताक्षर कर एवं फर्जी दस्तावेजों के आधार पर सम्बन्धित कम्पनियों में उसको कम्पनी के निदेशक के पद से निवृत्त दर्शाने के आरोपों के सम्बन्ध में दी गयी। माामले की गम्भीरता से देखते हुए इसकी जांच नौ सदस्यों एसआईटी टीम के द्वारा की गयी। एसआईटी द्वारा जांच के दौरान मामले से सम्बन्धित आडियों



क्लिप कब्जे में ली गयी साथ ही विभिन्न गवाहों के बयान अंकित किये गये। जांच के दौरान गवाहों के बयानों व प्राप्त दस्तावेजों के आधार पर गिरधारी लाल द्वारा उनके साथ जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किये जाने व अपने भतीजे सतेन्द्र राठौर के साथ मिलकर उनके फर्जी हस्ताक्षर कर व कूटरचित दस्तावेज तैयार कर उनके आधार पर अनुचित लाभ पाने के उददेश्य से उन्हें चार कम्पनियों में निदेशक के पद से हटाते हुए अपने भतीजे सतेन्द्र राठौर को उक्त चारों कम्पनियों में निदेशक बनाये जाने के तथ्य प्रकाश में आने पर मुकदमें में सतेन्द्र राठौर के नाम की वृद्धि की गयी। इसके अतिरिक्त गिरधारी लाल साहु के विरूद्ध उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न थानों में हत्या, हत्या के प्रयास, बलवा, व गैंगेस्टर एक्ट सहित विभिन्न अपराधिक प्रकरणों के 44 मुकदमें दर्ज होने की जानकारी प्राप्त हुई। जिसके बाद एसआईटी ने गिरधारी साहु को झांसी उत्तर प्रदेश से तथा सतेन्द्र राठौर को जोगी नवादा बरेली से गिरफ्तार किया गया।

दून वैली मेल

संपादकीय

बुढ़ापे की आर्थिक सुरक्षा

एक दिसंबर से नेशनल पेंशन सिस्टम के नियमों में बदलाव केवल तकनीकी सुधार नहीं, बल्कि पेंशन निवेश की व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और प्रतिस्पधर्ी बनाने की कोशिश है। लेकिन सवाल यह है कि क्या बेहतर विकल्पों की जानकारी से ही निवेशकों का भविष्य सुरक्षित हो जाएगा? बुढ़ापे की आर्थिक सुरक्षा हर कामकाजी व्यक्ति की सबसे बड़ी चिंता होती है। नौकरी के वर्षों में की गई बचत ही सेवानिवृत्ति के बाद सम्मानजनक जीवन का आधार बनती है। ऐसे में पेंशन व्यवस्था में होने वाला हर बदलाव सीधे करोड़ों लोगों की आर्थिक योजनाओं और भविष्य की उम्मीदों से जुड़ता है। नेशनल पेंशन सिस्टम में एक दिसंबर 2026 से लागू होने जा रहे नए प्रावधान इसी लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण ने एनपीएस के तहत विभिन्न निवेश योजनाओं के वर्गीकरण, नामकरण और उनके प्रदर्शन के तरीके में बदलाव किया है। नए प्रावधानों के तहत पेंशन योजनाओं के नाम एक समान प्रारूप में होंगे। अब योजना के नाम में पेंशन फंड का संक्षिप्त नाम, एनपीएस और योजना का विशिष्ट नाम शामिल होगा। श्रेणी के संकेतक अक्षर योजना के नाम का हिस्सा नहीं होंगे। साथ ही, अलग-अलग योजनाओं की श्रेणी और जोखिम स्तर की जानकारी भी स्पष्ट रूप से देनी होगी। इस बदलाव का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि पेंशन खाताधारकों को निवेश के विकल्प चुनने में अधिक पारदर्शिता मिलेगी। अब प्वाइंट आफ प्रेजेंस के डिजिटल मंचों पर किसी एक पेंशन फंड की योजनाओं को ही दिखाकर निवेशक की पसंद को सीमित नहीं किया जा सकेगा। संबंधित श्रेणी में उपलब्ध अन्य पेंशन फंडों की योजनाएं भी प्रदर्शित करनी होंगी। इससे निवेशकों को तुलनात्मक विकल्प मिलेंगे और किसी एक कंपनी या फंड की ओर उनका झुकाव बनाने की संभावना कम होगी। लेकिन इस बदलाव को पेंशन व्यवस्था में किसी बड़ी क्रांति के रूप में देखना जल्दबाजी होगी। योजनाओं के नाम बदलने, जोखिम की जानकारी स्पष्ट करने और विकल्पों की संख्या बढ़ाने से अपने आप बेहतर पेंशन सुनिश्चित नहीं हो जाती। असली सवाल निवेश पर मिलने वाले प्रतिफल, बाजार के जोखिम, प्रबंधन की विश्वसनीयता और सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली नियमित आय का है। भारत में सामाजिक सुरक्षा का दायरा अभी भी सीमित है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले करोड़ों लोगों के पास न तो सुनिश्चित पेंशन है और न ही बुढ़ापे में नियमित आय का कोई मजबूत आधार। निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के सामने भी सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक अनिश्चितता बनी रहती है। ऐसे में एनपीएस जैसी व्यवस्था को केवल निवेश आधारित योजना बनाकर छोड़ देना पर्याप्त नहीं है। इसे आम नागरिक के लिए भरोसेमंद सामाजिक सुरक्षा के विकल्प के रूप में विकसित करना जरूरी है। सरकार और नियामक संस्थाओं की जिम्मेदारी केवल निवेश के नए विकल्प उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं हो सकती। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि आम खाताधारक योजनाओं की भाषा, जोखिम और शर्तों को आसानी से समझ सके। वित्तीय साक्षरता के अभाव में विकल्पों की अधिकता कई बार सुविधा के बजाय भ्रम पैदा करती है। खासकर उन लोगों के लिए यह चुनौती अधिक है, जिनके पास निवेश संबंधी सलाह लेने के पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। पेंशन व्यवस्था में पारदर्शिता तभी सार्थक होगी, जब निवेशक को यह पता हो कि उसका पैसा कहां लगाया जा रहा है, उस पर कितना जोखिम है और भविष्य में उसे कितनी आर्थिक सुरक्षा मिल सकती है। केवल आकर्षक नाम और बेहतर प्रदर्शन वाली योजनाओं के दावों से पेंशन का भरोसा नहीं बनाया जा सकता। एक दिसंबर से लागू होने वाले नए नियमों को इसी व्यापक नजरिये से देखने की जरूरत है। यह सुधार निवेशकों को अधिक जानकारी और विकल्प देने की दिशा में सकारात्मक कदम है, लेकिन पेंशन व्यवस्था की असली कसौटी खाताधारकों का भरोसा है। सरकार को यह समझना होगा कि पेंशन कोई सामान्य वित्तीय उत्पाद नहीं, बल्कि जीवनभर की कमाई और बुढ़ापे के सम्मान से जुड़ा विषय है। निवेश के विकल्प बदलना आसान है, लेकिन पेंशन का भरोसा कायम करना बड़ी जिम्मेदारी है। आखिरकार पेंशन व्यवस्था की सफलता इस बात से तय होगी कि सेवानिवृत्ति के बाद नागरिक आर्थिक रूप से कितना सुरक्षित और आत्मनिर्भर महसूस करता है।

दुकान का ताला तोड मोबाइल फोन व लैपटॉप चोरी

संवाददाता

देहरादून।। चोरों ने दुकान का ताला तोड मोबाइल व लैपटॉप चोरी कर लिये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार शिवालिक नगर निवासी अश्वनी ने ऋषिकेश कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी गीतानगर में दुकान है। आज जब वह अपनी दुकान पर पहुंचा तो देखा कि दुकान के ताले टूटे हुए थे तथा अन्दर सारा सामान बिखरा हुआ था। चोर उसके यहां से मोबाइल फोन प लैपटॉप चोरी करके ले गये हैं। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

भाजपा का मिशन-65 एक्टिवेट

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में 2027 के विधानसभा चुनाव की औपचारिक घोषणा भले ही अभी दूर हो, लेकिन भाजपा ने चुनावी रणभेरी बजा दी है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के देहरादून दौरे के साथ ही पार्टी का मिशन-65 सक्रिय हो गया है। भाजपा ने इस बार केवल सत्ता में वापसी का लक्ष्य नहीं रखा, बल्कि 70 सदस्यीय विधानसभा में 65 से अधिक सीटें जीतकर लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का महत्वाकांक्षी खाका सामने रख दिया है। शाह का यह लक्ष्य महज चुनावी नारा नहीं, बल्कि प्रदेश संगठन और धामी सरकार के लिए दिल्ली से आया सीधा राजनीतिक संदेश भी माना जा रहा है।



◆सत्ता की हैट्रिक के लिए भाजपा हाईकमान ने संभाल ली है कमान
◆अमित शाह ने फूंका चुनावी बिगुल, धामी के नेतृत्व पर लगाई मुहर
◆70 सीटों पर संगठन को चुनावी मोड में लाने की चल रही है तैयारी
◆बूथ से लेकर सत्ता के गलियारों तक जल्द शुरु होगी सियासी घेराबंदी

देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में अमित शाह ने कार्यकर्ताओं को 65 पार का लक्ष्य देते हुए घर-घर पहुंचने और बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। उन्होंने 2017 में भाजपा को मिली 57 सीटों और 2022 में 47 सीटों की जीत का उल्लेख करते हुए इस बार उससे भी बड़ी सफलता हासिल करने की चुनौती दी। साफ है कि भाजपा अब पिछले चुनावों के प्रदर्शन से आगे निकलकर उत्तराखंड की राजनीति में नया रिकार्ड बनाने की तैयारी में है। अमित शाह के दौरे का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक संकेत मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व को लेकर रहा। चुनाव से पहले नेतृत्व को लेकर समय-समय पर उठने वाली अटकलों के बीच शाह ने धामी सरकार की उपलब्धियों को प्रमुखता से गिनाया। समान नागरिक संहिता, सख्त नकल विरोधी कानून, धर्मांतरण विरोधी कानून, रोजगार और निवेश जैसे मुद्दों को भाजपा के चुनावी एजेंडे का हिस्सा बनाया गया।

इससे साफ संकेत मिलता है कि भाजपा फिलहाल धामी सरकार के कामकाज को ही अपने चुनावी अभियान का प्रमुख आधार बनाने जा रही है। पार्टी के सामने चुनौती इन उपलब्धियों को केवल सरकारी प्रचार तक सीमित न रखकर मतदाताओं के बीच विश्वसनीय राजनीतिक संदेश में बदलने की होगी। मिशन-65 की सफलता का रास्ता संगठन से होकर गुजरता है। भाजपा जानती है कि केवल बड़े नेताओं की रैलियों और भाषणों से इतनी बड़ी जीत हासिल नहीं की जा सकती। इसके लिए प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में संगठन की सक्रियता, बूथ प्रबंधन, पन्ना प्रमुखों की भूमिका और स्थानीय समीकरणों को साधना होगा।

पार्टी पहले ही विधानसभा स्तर पर संगठनात्मक विस्तार, कार्यकर्ता प्रशिक्षण, बूथ संपर्क और नए मतदाताओं तक पहुंच बनाने की कवायद तेज कर चुकी है। राष्ट्रीय नेतृत्व भी प्रदेश की कोर कमेटी के साथ चुनावी तैयारियों की समीक्षा कर चुका है। अब इन गतिविधियों को एक केंद्रीय चुनावी अभियान के तहत गति देने की तैयारी है। भाजपा की चुनावी रणनीति में कांग्रेस सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौती है, लेकिन इस बार मुकाबला केवल भाजपा और कांग्रेस के बीच सीमित रहने के संकेत नहीं हैं। उत्तराखंड क्रांति दल अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने में जुटा है। क्षेत्रीय अस्मिता, मूल निवास, भू-कानून और पहाड़ के सवालों को लेकर तीसरे राजनीतिक विकल्प की कोशिशें भी तेज हैं।

ऐसे में भाजपा के सामने दोहरी चुनौती होगी। एक तरफ कांग्रेस के सत्ता विरोधी अभियान का मुकाबला करना होगा, दूसरी तरफ क्षेत्रीय मुद्दों पर उभरने वाली राजनीतिक ताकतों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में स्थानीय असंतोष और क्षेत्रीय पहचान का सवाल चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकता है। भाजपा के लिए मिशन-65 का रास्ता आसान नहीं है। बेरोजगारी, पलायन, महंगाई, भर्ती परीक्षाओं की विश्वसनीयता, भ्रष्टाचार के आरोप, आपदा प्रबंधन और महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दे विपक्ष के हाथ में हैं। अंकिता भंडारी हत्याकांड को लेकर उठ रहे सवाल भी सरकार के लिए राजनीतिक चुनौती बने हुए हैं।

भाजपा के सामने सबसे बड़ी परीक्षा यह होगी कि वह अपने विकास और सुशासन के दावों को जनता के अनुभव से

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

कांग्रेस ने भाजपा के दावों की खोली पोल

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में 2027 के विधानसभा चुनाव की सियासी बिसात बिछने लगी है। भाजपा जहां केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के देहरादून दौरे को चुनावी अभियान के शंखनाद और संगठन की ताकत के प्रदर्शन के रूप में पेश कर रही है, वहीं कांग्रेस ने इस पूरे आयोजन को फ्लाप करार देकर भाजपा के दावों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। कांग्रेस का कहना है कि मंच से 65 पार का नारा देने और बड़े-बड़े दावे करने से जनता का समर्थन हासिल नहीं होता। प्रदेश की जनता अब सरकार के कामकाज का हिसाब मांग रही है।



◆65 पार के नारे पर कांग्रेस का पलटवार, कहा- भीड़ जुटाने से नहीं मिलता जनसमर्थन
◆चुनावी हुंकार के बीच अंकिता, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के सवालों से बच रही भाजपा
◆कांग्रेस ने इस पूरे आयोजन को फ्लाप करार देकर भाजपा के दावों पर सवाल खड़े किए

अमित शाह ने छह नवंबर को देहरादून में आयोजित कार्यक्रम के दौरान भाजपा को आगामी विधानसभा चुनाव में 65 से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य दिया था। उन्होंने धामी सरकार की उपलब्धियां गिनाईं और कांग्रेस पर जमकर राजनीतिक हमले किए। भाजपा ने इस आयोजन को चुनावी तैयारी के लिहाज से बड़ी सफलता बताया, लेकिन कांग्रेस ने इसे सत्ता का शक्ति प्रदर्शन बताते हुए भाजपा की राजनीतिक जमीन पर ही सवाल खड़े कर दिए। प्रदेश कांग्रेस नेत्री और पार्टी की मुख्य प्रवक्ता गरिमा मेहरा दसौनी ने पहले ही अमित शाह की प्रस्तावित लोकतंत्र बचाओ यात्रा पर सवाल उठाए थे। उनका कहना था कि लोकतंत्र केवल नारों और रैलियों से नहीं बचता, बल्कि संवैधानिक संस्थाओं, नागरिक अधिकारों और जनादेश के सम्मान से सुरक्षित रहता है। उन्होंने 2016 में उत्तराखंड की तत्कालीन कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की राजनीतिक घटनाओं का भी जिक्र किया।

कांग्रेस ने अमित शाह के दौरे के दौरान केवल बयानबाजी तक खुद को सीमित नहीं रखा। एनएसयूआई और महिला कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने काले गुब्बारे उड़ाकर तथा गृह मंत्री का पुतला फूंककर विरोध जताया। कार्यकर्ताओं ने श्अमित शाह गो बैकश् के नारे लगाए। एस्लेहाल चौक पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्का-मुक्की हुई। वहीं अंकिता भंडारी हत्याकांड में न्याय और दुष्यंत गौतम की गिरफ्तारी की मांग को लेकर भी कांग्रेस ने अपना विरोध दर्ज कराया। कांग्रेस का राजनीतिक हमला केवल कार्यक्रम की भीड़ तक सीमित नहीं है। पार्टी ने भाजपा से पूछा है कि दो बार जनता का जनादेश मिलने और केंद्र तथा राज्य में डबल इंजन की सरकार होने के बावजूद उत्तराखंड की बुनियादी समस्याएं क्यों बनी हुई हैं? बेरोजगारी, भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताएं, महिलाओं की सुरक्षा, भ्रष्टाचार, पलायन और आपदा प्रभावितों के पुनर्वास जैसे सवालों का जवाब कौन देगा?

अंकिता भंडारी हत्याकांड को लेकर भी कांग्रेस भाजपा को लगातार घेर रही है। पार्टी का आरोप है कि इस मामले में उठ रहे सवालों का राजनीतिक जवाब देने के बजाय सरकार विपक्ष पर आरोप लगाकर अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश कर रही है। कांग्रेस का कहना है कि जब तक पीड़ित परिवार की शंकाओं का समाधान नहीं होता, तब तक यह मुद्दा प्रदेश की राजनीति में बना रहेगा। दरअसल,

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

ग्रामीणों ने स्थायी शिक्षक की मांग उठाई

रुद्रप्रयाग(आरएनएस)। तल्ला नागपुर क्षेत्र के ग्राम तड़ाग स्थित प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों की अस्थायी व्यवस्था को लेकर ग्रामीणों ने चिंता जताई है। विद्यालय में कक्षा एक से पांच तक 25 बच्चे अध्ययनरत हैं। यहां दो शिक्षिकाएं तैनात हैं, लेकिन एक शिक्षिका के मातृत्व अवकाश पर होने से पठन-पाठन की जिम्मेदारी एक शिक्षिका पर आ गई है। विभाग की ओर से अलग-अलग विद्यालयों से शिक्षकों को संबद्ध कर व्यवस्था बनाई जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि कभी एक तो कभी दूसरे विद्यालय से शिक्षक भेजे जाने के कारण बच्चों की पढ़ाई में निरंतरता और समन्वय प्रभावित हो रहा है।ग्राम प्रधान अखिलेश सिंह नेगी ने कहा कि अवकाश अवधि तक विद्यालय में एक शिक्षक की नियमित व्यवस्था की जाए, ताकि बच्चों की पढ़ाई सुचारू रूप से चल सके। इधर, जिला शिक्षा अधिकारी अजय चौधरी ने बताया कि शिक्षिका के अवकाश पर रहने के दौरान नजदीकी विद्यालयों से शिक्षकों को संबद्ध कर व्यवस्था करनी पड़ती है। साथ ही यह भी ध्यान रखना होता है कि जिन विद्यालयों से शिक्षक भेजे जा रहे हैं, वहां का पठन-पाठन प्रभावित न हो। उन्होंने कहा कि जिन विद्यालयों से शिक्षक संबद्ध किए जाते हैं, वहां के ग्रामीण भी शिक्षकों की उपलब्धता की मांग करते हैं। इसलिए दोनों पक्षों का ध्यान रखते हुए व्यवस्था बनाई जाती है। उन्होंने बताया कि मातृत्व अवकाश के तहत छह महीने तक छुट्टी का प्रावधान है। शिक्षिका के कुछ समय बाद लौटने पर व्यवस्था सामान्य हो जाएगी।

नौटी में मिनी सचिवालय का आठ लाख रुपये से होगा जीर्णोद्धार

चमोली(आरएनएस)। नौटी में लंबे समय से बदहाल मिनी सचिवालय भवन के दिन जल्द बदलने वाले हैं। राजजात मद से करीब आठ लाख रुपये की लागत से भवन का जीर्णोद्धार कराया जाएगा। इसके लिए कार्यदायी संस्था विकासखंड कर्णप्रयाग की ओर से टेंडर प्रक्रिया भी पूरी कर ली गई है। करीब डेढ़ दशक पूर्व बने इस मिनी सचिवालय भवन का उपयोग किसी विभाग की स्थापना न होने के कारण नहीं हो पाया था। उचित देखरेख और रखरखाव के अभाव में यह भवन धीरे-धीरे जर्जर स्थिति में पहुंच गया था।बता दें कि वर्ष 2027 में नंदा देवी राजजात यात्रा का आयोजन प्रस्तावित है। इसके मद्देनजर प्रशासन नौटी, नंदासैंण, कांसुवा सहित आसपास के इलाकों में बदहाल सरकारी भवनों को ठीक कराने का कार्य कर रहा है। इसी के तहत इस मिनी सचिवालय भवन के जीर्णोद्धार को भी स्वीकृति दी गई है, ताकि राजजात के दौरान इस भवन का बहुउद्देशीय उपयोग किया जा सके।सहायक खंड विकास अधिकारी प्रकाश चंद्र मैखुरी ने बताया कि मरम्मत का प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका है और धनराशि आवंटित होते ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। आठ लाख रुपये की धनराशि से भवन की आवश्यक मरम्मत और सुधार कार्य किए जाएंगे।

कर्णप्रयाग अस्पताल को मिली नई एंबुलेंस, मरीजों को मिलेगी राहत

चमोली(आरएनएस)। उपजिला अस्पताल कर्णप्रयाग की आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को अब और मजबूती मिली है। नैनीताल बैंक लिमिटेड के अस्पताल को एक नई एंबुलेंस दी है जिससे आपात स्थिति में मरीजों को समय पर हायर सेंटर भेजने में आसानी होगी। चमोली जिले का यह मुख्य अस्पताल नारायणबगड़, थराली, देवाल, गैरसैंण, पोखरी और नंदानगर सहित आसपास के दुर्गम क्षेत्रों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का प्रमुख केंद्र है। यहां रोजाना बड़ी संख्या में मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। साथ ही राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अन्य जगहों पर होने वाली दुर्घटनाओं के घायलों को भी यहीं लाया जाता है। अस्पताल में पहले केवल एक एंबुलेंस होने के कारण कई बार गंभीर मरीजों को श्रीनगर, ऋषिकेश या अन्य हायर सेंटर रेफर करने में भारी मशक्कत करनी पड़ती थी। परिजनों को महंगे दामों पर निजी वाहन किराए पर लेने पड़ते थे। अस्पताल के सीएमएस डॉ. बीपी पुरोहित ने बताया कि नई एंबुलेंस में चालक और सभी जरूरी मेडिकल उपकरण उपलब्ध हैं।

दीपावली पर सुरक्षा को लेकर देवप्रयाग कोतवाली में बैठक

पौड़ी(आरएनएस)। दीपावली के पावन पर्व को शांतिपूर्ण सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने के उद्देश्य से देवप्रयाग कोतवाली पुलिस की ओर से स्थानीय व्यापारियों और पटाखा विक्रेताओं के साथ एक विशेष बैठक आयोजित की गई। कोतवाल कृष्णकांत के अध्यक्षता में हुई बैठक में आगामी त्योहारों में सुरक्षा व्यवस्था यातायात प्रबंधन और अग्नि सुरक्षा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। कोतवाल ने पटाखा व्यापारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि सुरक्षा की दृष्टि से घनी आबादी और संकरे बाजारों में आतिशबाजी की दुकानें लगाने की अनुमति नहीं होगी। अग्निकांड जैसी किसी भी अनहोनी से बचाव के लिए पटाखों की बिक्री केवल प्रशासन की ओर से निर्धारित खुले स्थानों पर ही की जाएगी। इसके लिए मानकों के पालन के निर्देश भी दिए गए।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

सही मायने में दीवाली कैसे मनाएं?

◆संत राजिन्दर सिंह जी महाराज

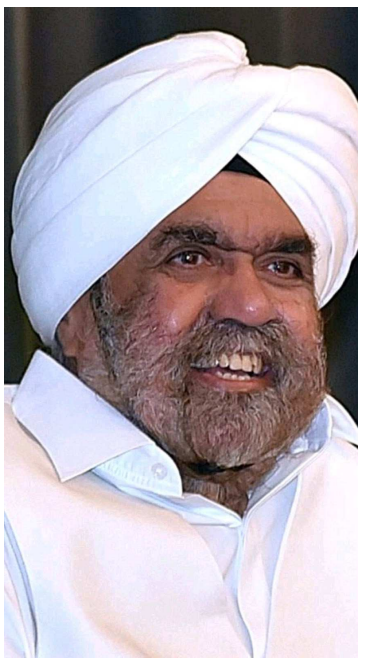
आज दीवाली का दिन है। इतिहास से हमें पता चलता है कि आज के दिन बड़े-बड़े संतों-महात्माओं के जीवन में अनेक घटनाएं हुई हैं। जैसे भगवान महावीर को निर्वाण पद की प्राप्ति आज ही के दिन हुई थी। दीवाली का दिन सिक्ख इतिहास में भी बड़ी महत्ता रखता है। छट्ठे गुरु श्री हरगोबिन्द सिंह जी महाराज जो ग्वालियर के किले में कैद थे, आज ही के दिन वे 52 राजा-महाराजाओं के साथ रिहा हुए थे। स्वामी रामतीर्थ जी का जन्म भी दीवाली के दिन ही हुआ था। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण भी दीवाली के दिन हुआ था और हम सब यह अच्छी तरह जानते हैं कि चौदह वर्ष के बनवास के बाद श्री रामचन्द्र जी महाराज जब अयोध्या वापिस पहुँचे तो आज ही के दिन लोगों ने दीये जलाए थे।

दीवाली खुशियों का त्यौहार है। दीवाली से कुछ दिन पहले हम अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं और दीवाली के दिन घर की सजावट कर दीये जलाते हैं। इस मौके पर सभी लोग पटाखे जलाकर अपनी खुशी व्यक्त करते हैं।

अपने घर की सफाई के दौरान हम उन चीजों को बाहर निकालते हैं जो हमारे लिए उपयोगी या लाभदायक नहीं होतीं। अगर हम अपने साथ बहुत सा अनावश्यक सामान ढोते फिर रहे हैं या उन चीजों की ओर ध्यान देने में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं जो हमें कोई लाभ नहीं पहुँचातीं तो इसका मतलब यह है कि हम ऐसी जिंदगी जी रहे हैं जो हमें अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य जोकि अपने आपको जानना और पिता-परमेश्वर को पाना है, को पाने में मददगार नहीं है।

ऐसा जीवन जिसमें कि हमारा अपने जीवन लक्ष्य के प्रति कोई ध्यान न हो तो ऐसी अवस्था में हमारे अंदर हर वक्त एक संघर्ष चलता रहता है, जिसमें एक ओर हमारा मन इस बाहरी संसार में लिप्त रहना चाहता है तो दूसरी ओर हमारी आत्मा अंतर में परमात्मा को पाना चाहती है। हमारी आत्मा मन द्वारा उत्पन्न गंदगी को साफ करने की कोशिश करती रहती है लेकिन जैसे ही आत्मा हमारे विचारों, वचनों और कार्यों की गंदगी को साफ करती है, वैसे ही हमारा मन और अधिक गंदगी पैदा कर देता है।

मन किस प्रकार की गंदगी उत्पन्न करता है? हमारा मन इन पाँच चोरों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की मदद से हमारे अंदर गंदगी पैदा करता है। यही पाँचों चोर हमारे विचारों, वचनों और कार्यों द्वारा हमें कर्मों के बंधन में फंसाते हैं। जब हम अंतर में ध्यान टिकाकर अपने मन को शांत करने की कोशिश करते हैं तो इन पाँच चोरों से



संबंधित विचार हमारे ध्यान को एकाग्र नहीं होने देते।

कई बार जब हम ध्यान-अभ्यास के दौरान अपने मन को स्थिर करने का प्रयास करते हैं तो क्रोध संबंधी विचार हमारे ध्यान को भटकाने लगते हैं। ये क्रोधपूर्ण विचार हमारे मन में घूमते रहते हैं और हम आंतरिक दिव्य प्रकाश पर ध्यान टिकाने के बजाय इन्हीं विचारों को सोचने में लग जाते हैं।

बहुत सी बार ध्यान एकाग्र करने के बजाय हम यह सोचने लगते हैं कि हम भी वह सब कुछ कैसे पा सकते हैं जो दूसरों के पास हैं? क्योंकि हमारा मन हमें लोभ में फंसा देता है, जिससे कि हम अपने ध्यान को अंतर में एकाग्र नहीं कर पाते। जब हम ध्यान-अभ्यास में बैठते हैं तो कई बार ऐसा भी होता है कि हमें उन लोगों या चीजों का भी ख्याल आने लगता है जिनसे हम मोह करते हैं। ध्यान-अभ्यास के दौरान ऐसा भी होता है जब हम यह सोचने लगते हैं कि हम दूसरों से ज्यादा खूबसूरत, ज्यादा बुद्धिमान या ज्यादा ताकतवर हैं। ऐसे में हम ध्यान टिकाने की बजाय अपने आपके बारे में सोचने लग जाते हैं।

आत्मा, हमारे मन के इन सभी विचारों से साफ होना चाहती है। वह अंतर में प्रभु की ज्योति पर ध्यान टिकाने की कोशिश करती है लेकिन हमारा मन बहुत ही ताकतवर है। जो हर वक्त हमारी आत्मा को मैला करता जा रहा है? ऐसी अवस्था में हमारी आत्मा को मदद की जरूरत है। इसके लिए हमें वक्त के पूर्ण सत्गुरु की आवश्यकता होती है जो हमारे मन की गंदगी को न सिर्फ साफ करने में हमारी मदद करते हैं बल्कि मन को शांत व स्थिर कैसे किया जाए, उसका भी उपाय बताते हैं।

हम अपने आप मन को तब तक शांत नहीं कर सकते, जब तक हमें किसी पूर्ण सत्गुरु की मदद न मिले। एक पूर्ण सत्गुरु हमारी मदद कैसे करते हैं? सबसे पहले वे हमें पवित्र नाम से जोड़ते हैं। जब हम ध्यान-अभ्यास के दौरान अपने सत्गुरु द्वारा दिये गए इन नामों का जाप करते हैं तो इससे हमारा मन शांत होता है, जिससे कि हम अपने अंदर प्रभु की ज्योति व श्रुति का अनुभव करते हैं। दूसरा सत्गुरु हमें यह भी समझाते हैं कि निष्काम सेवा करने से हम मन के दुष्प्रभावों से मुक्ति पा सकते हैं और अपने मन पर नियंत्रण रख सकते हैं जिससे कि हमारी आत्मा भी साफ बनी रहती है। अपने सत्गुरु के मार्गदर्शन में ही हम अपने जीवन को सही दिशा की ओर ले जाकर सही मायनों में दीवाली का त्यौहार मना सकते हैं।

संतों-महापुरुषों के अनुसार जिस प्रकार हम दीवाली के मौके पर कूड़ा-करकट बाहर निकालकर अपने घर की सफाई करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमें अपने अवगुणों जैसे - ईर्ष्या-द्वैष, निंदा-चुगली, हिंसा, झूठ, गंदे विचारों और अहंकार को अपने अंदर से बाहर निकालना है और उसकी जगह अहिंसा, प्रेम, पवित्रता, नम्रता और निष्काम सेवा जैसे गुणों को अपने जीवन में ढालना है, जिससे कि हमारा अंत: करण भी साफ हो और हम अपने अंतर में दीवाली मनाने के लायक हो सकें। सभी धर्मों की बुनियादी शिक्षाओं में हमें समझाया गया है कि जैसे हम बाहरी दीवाली मनाते हैं, ठीक उसी प्रकार हम अपने अंतर में भी दीवाली मना सकते हैं। दीवाली के त्यौहार पर हम जो दीये और पटाखे जलाते हैं वो सब हमारे अंतर मे मौजूद प्रभु की ज्योति और श्रुति का प्रतीक हैं। तो आईये! दीवाली के इस त्यौहार पर हम बाहरी सफाई के साथ-साथ अपने अंदर की भी सफाई करें और सबसे जरूरी कि हम ध्यान-अभ्यास में भी समय दें, ताकि हमें प्रभु की ज्योति और श्रुति का अनुभव हो। जिससे कि हम सच्चे मायनों में दीवाली के इस त्यौहार को मना सकें।

बछेर और ज्योतिर्मठ क्षेत्र को दिवाली पर मिली बस सेवा की सौगात

चमोली(आरएनएस)। गढ़वाल मोटर ऑनर्स यूनियन (जीएमओयू) ने चमोली जिले के बछेर और ज्योतिर्मठ क्षेत्र के लोगों को दिवाली का तोहफा दिया है। दोनों क्षेत्रों के लिए देहरादून से नई बस सेवा शुरू की गई है। इससे स्थानीय लोगों को आवागमन में सुविधा मिलने के साथ ही छोटे वाहनों पर निर्भरता और अधिक किराये से भी राहत मिलेगी।

बछेर क्षेत्र में लंबे समय से बस सेवा की मांग उठ रही थी। यहां के ग्रामीण अब तक छोटे वाहनों से अधिक किराया देकर सफर करने को मजबूर थे। वाहन नहीं मिलने पर उन्हें बुकिंग करानी पड़ती थी, जिससे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता था। गोपेश्वर-पोखरी सड़क जनपद की सबसे पुरानी सड़कों में शामिल है। पीएमजीएसवाई और लोनिवि के अधीन इस सड़क पर अब तक बस सेवा का संचालन नहीं हो पाया था। जीएमओयू के अधिकारियों ने परिवहन विभाग और जिला प्रशासन की संस्तुति के बाद रोपा गांव (बछेर) तक बस सेवा शुरू कर दी है। अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में इसका संचालन शुरू हुआ।जीएमओयू के स्टेशन इंचार्ज लखपत रावत ने बताया कि देहरादून से सुबह पांच बजे रोपा गांव और सुबह साढ़े पांच बजे ज्योतिर्मठ के लिए बस संचालित की जाएगी।बीकेटीसी के पूर्व सदस्य वीरेंद्र असवाल और सत्य प्रसाद मैठाणी ने कहा कि दोनों क्षेत्रों में बस सेवा की लंबे समय से आवश्यकता थी। बस संचालन शुरू होने से स्थानीय लोगों को आवाजाही में सहूलियत मिलेगी और आर्थिक नुकसान भी कम होगा।

रोजाना करें क्रैब वॉक एक्सरसाइज, मिलेंगे 5 बेहतरीन फायदे

क्रैब वॉक एक ऐसा एक्सरसाइज है, जो न केवल आपकी मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, बल्कि आपके पूरे शरीर को संतुलित और स्वस्थ रखता है। यह एक्सरसाइज आपके शरीर की लचीलापन को बढ़ाता है और रोजमर्रा की गतिविधियों में सहायक होता है। क्रैब वॉक करने से आपके कंधे, पीठ, पेट और पैरों की मांसपेशियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आइए आज हम आपको इस एक्सरसाइज के कुछ बेहतरीन फायदों के बारे में बताते हैं।

कंधों और पीठ को मजबूत बनाता है : क्रैब वॉक करते समय आपके कंधे और पीठ की मांसपेशियां सक्रिय होती हैं। इस एक्सरसाइज से आपके कंधों की ताकत बढ़ती है और पीठ की मांसपेशियों पर अच्छा असर पड़ता है। नियमित रूप से क्रैब वॉक करने से आपकी मुद्रा सही रहती है और कंधों में जाम होने वाली समस्या से राहत मिलती है। इसके अलावा यह एक्सरसाइज पीठ की मांसपेशियों को मजबूती देता है, जिससे पीठ दर्द की समस्या कम होती है।

पेट की चर्बी घटाने में है मददगार : क्रैब वॉक एक बेहतरीन कार्डियो एक्सरसाइज है, जो पेट की अतिरिक्त चर्बी को घटाने में मदद करता है। इस एक्सरसाइज से आपका दिल तेजी से धड़कता है, जिससे कैलोरी बर्न होती है और पेट की चर्बी घटती है। नियमित रूप से क्रैब वॉक करने से आपका मेटाबॉलिज्म तेज होता है, जिससे शरीर में जमा अतिरिक्त चर्बी कम होती है। इसके अलावा यह एक्सरसाइज पेट की मांसपेशियों को मजबूत करता है, जिससे पेट का आकार भी सुधरता है।

संतुलन बनाए रखने में है सहायक : क्रैब वॉक करते समय आपके पैर और हाथ एक-दूसरे के विपरीत चलते हैं, जिससे आपका संतुलन बेहतर होता है। यह एक्सरसाइज आपके शरीर की स्थिरता और संतुलन क्षमता को बढ़ाता है। नियमित रूप से क्रैब वॉक करने से आपका शरीर स्थिर रहता है और रोजमर्रा की गतिविधियों में भी आसानी होती है। इसके अलावा यह एक्सरसाइज आपके पैरों और हाथों की मांसपेशियों को मजबूत करता है, जिससे आपका संतुलन और भी बेहतर होता है।

मानसिक सेहत के लिए है अच्छा : एक्सरसाइज हमेशा मानसिक सेहत के लिए फायदेमंद होता है और क्रैब वॉक भी इससे अछूता नहीं है। नियमित रूप से क्रैब वॉक करने से आपका मूड बेहतर होता है, तनाव कम होता है और मानसिक स्पष्टता मिलती है। यह एक्सरसाइज आपको ऊर्जावान महसूस कराता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। इसके अलावा यह एक्सरसाइज आपकी मानसिक शक्ति को भी मजबूत करता है, जिससे आप अधिक सकारात्मक महसूस करते हैं और जीवन में चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होते हैं।

एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर और मालिश में होता है ये अंतर, जानिए इनके बारे में

शरीर की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर और मालिश का सहारा लिया जा सकता है। हालांकि, कई लोगों के लिए ये तीनों तकनीकें एक ही तरह की लगती हैं, लेकिन वास्तव में ये तीनों अलग हैं और इनका इस्तेमाल करने का तरीका भी अलग है। आइए आज हम आपको तीनों तकनीकों के इस्तेमाल और इनके बीच के अंतर के बारे में विस्तार से बताते हैं ताकि आप इनसे जुड़ी किसी भी भ्रम की चपेट में न आएं।

एक्यूप्रेशर क्या है? : एक्यूप्रेशर एक ऐसी तकनीक है, जिसके जरिए शरीर की बाहरी त्वचा पर हल्का दबाव डालकर ऊर्जा को संतुलित किया जा सकता है। इसके लिए हाथों की उंगलियों का इस्तेमाल किया जाता है। यह तकनीक दर्द और तनाव को कम करने, पाचन क्रिया को सुधारने और सामान्य स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। एक्यूप्रेशर की प्रक्रिया के दौरान शरीर में खून के प्रवाह को बढ़ाने के साथ-साथ मांसपेशियों को आराम देने में भी मदद मिल सकती है।

एक्यूपंक्चर की प्रक्रिया कैसे होती है? : एक्यूपंक्चर एक ऐसी पारंपरिक चीनी चिकित्सा है, जिसमें पतली सूई को त्वचा में डालकर दबाया जाता है। यह प्रक्रिया शरीर के खास बिंदुओं पर की जाती है और माना जाता है कि इससे ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित करने में मदद मिलती है। एक्यूपंक्चर दर्द को कम करने, तनाव को दूर करने और सामान्य स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सहायक है। इस प्रक्रिया के दौरान सूई का इस्तेमाल करने की जरूरत होती है, जबकि एक्यूप्रेशर में ऐसा नहीं होता।

मालिश क्या है? : मालिश एक शारीरिक तकनीक है, जिसमें हाथों से शरीर के हिस्सों को रगड़कर या दबाकर आराम दिया जाता है। मालिश अलग-अलग तरह से की जा सकती है, जैसे कि सिर की मालिश, पीठ की मालिश, पैरों की मालिश आदि। यह प्रक्रिया शरीर के खून के प्रवाह को बढ़ाने, मांसपेशियों को आराम देने और तनाव को कम करने में मदद कर सकती है। मालिश में किसी भी उपकरण का इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

तीनों तकनीकों में क्या अंतर है? : एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर और मालिश तीनों तकनीकें अलग-अलग होती हैं, लेकिन इनके इस्तेमाल के लिए शरीर की ऊर्जा को संतुलित करना मुख्य उद्देश्य होता है। एक्यूप्रेशर के लिए हाथों की उंगलियों का इस्तेमाल किया जाता है, जबकि एक्यूपंक्चर के लिए पतली सूई की जरूरत होती है। मालिश के लिए सिर्फ हाथों का इस्तेमाल होता है। इन तीनों तकनीकों का इस्तेमाल करने से दर्द को कम करने, तनाव को दूर करने और सामान्य स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर और मालिश को सुरक्षित माना जाता है, लेकिन इनका सही तरीके से इस्तेमाल करना जरूरी है।

केंद्रीय विद्यालय बीएचईएल में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

❐शिवाजी सदन ने जीती सर्वश्रेष्ठ सदन की ट्रॉफी, टैगोर सदन रहा उपविजेता

संवाददाता

हरिद्वार। केंद्रीय विद्यालय बीएचईएल, हरिद्वार में विगत दिवस वार्षिक खेलकूद दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि पार्थ सारथी गौड़ा, चेयरमैन नॉमिनी, विद्यालय प्रबंधन समिति एवं एजीएम (एचआर), बीएचईएल हरिद्वार के आगमन के साथ हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य बृजेशपाल सिंह ने मुख्य अतिथि का हरित स्वागत किया। इसके बाद विद्यार्थियों ने आकर्षक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया।



मुख्य अतिथि ने विद्यालय ध्वज फहराकर खेलकूद प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ किया। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने अनुशासित मार्च पास्ट प्रस्तुत किया, जिसकी मुख्य अतिथि ने सलामी ली। कक्षा 12वीं की छात्रा लवी ने चारों सदनों के प्रतिभागियों को खेल भावना एवं अनुशासन की शपथ दिलाई। शारीरिक शिक्षा शिक्षिका परुल सैनी ने खेल प्रतियोगिताओं के प्रारंभ की घोषणा की।

खेल दिवस पर विद्यार्थियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। चारों सदनों की रंग-बिरंगी खेल वेशभूषा और खिलाड़ियों का जोश आकर्षण का केंद्र रहा। कनिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों के लिए बोरी दौड़, तीन टांग दौड़, नींबू-चम्मच दौड़ तथा सिर पर पुस्तक संतुलित कर दौड़ने जैसी रोचक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेताओं को प्रधानाचार्य बृजेशपाल सिंह एवं मुख्य अतिथि पार्थ सारथी गौड़ा ने पदक और प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन के आधार पर शिवाजी सदन ने सर्वश्रेष्ठ खेल सदन की ट्रॉफी अपने नाम की, जबकि अंतर-सदनीय प्रतियोगिताओं में टैगोर सदन प्रथम उपविजेता रहा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पार्थ सारथी गौड़ा ने सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि खेलकूद विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से बच्चों में अनुशासन, टीम भावना, आत्मविश्वास और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती है। कार्यक्रम के समापन पर गणित के स्नातकोत्तर शिक्षक नवीन वाधेरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

अब हैट्रिक नहीं, तीस साल के लिए बेदखल होगी भाजपा:धस्माना

संवाददाता

देहरादून। सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि, 'भाजपा को हैट्रिक का ख्वाब छोड़कर अब तीस साल तक सत्ता से बेदखल होने की तैयारी करनी चाहिए।'

आज यहां देहरादून के परेड ग्राउंड में आज संपन्न हुई केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की रैली को कांग्रेस ने सुपर-डुपर फ्लॉप शो करार दिया है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य एवं उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने अपने ईसी रोड स्थित कैंप कार्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए भाजपा पर तीखा हमला बोला। धस्माना ने कहा कि त्योहार के दिन जब मंदी की मार झेल रहा व्यापारी कुछ व्यापार की उम्मीद कर रहा था, तब भाजपा की जबरन की रैली के कारण पूरे दिन का काम चौपट हो गया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता दस साल के भाजपा के कुशासन से त्रस्त हो चुकी है और अब इससे छुटकारा पाना चाहती है। इसका नजारा आज गृह मंत्री की बहु-प्रचारित रैली में साफ दिखाई दिया, जहां पूरी सरकारी मशीनरी और ताकत लगाने के बावजूद भाजपा सम्मानजनक भीड़ भी नहीं जुटा पाई। हमारे राजभवन कूच से आधी भीड़ भी भाजपा नहीं जुटा पाई। धस्माना ने कहा कि गृह मंत्री आज भी अपने पुराने राग हिंदू-मुस्लिम, मजार ही अलापते रहे और उत्तराखंड के विकास के लिए कोई नया विजन नहीं दिया। प्रदेश की जनता अब इन जुमलों के झांसे में आने वाली नहीं है। उन्होंने कहा कि आज रैली के फ्लॉप होने का एक बड़ा कारण अंकिता भंडारी प्रकरण भी है। प्रदेश की जनता समझ चुकी है कि इस जघन्य प्रकरण में वीआईपी को बचाने के लिए उसे कानूनी संरक्षण दिया जा रहा है। अमित शाह के उत्तराखंड में हैट्रिक लगाने के ऐलान पर तंज कसते हुए धस्माना ने कहा कि, 'भाजपा को हैट्रिक का ख्वाब छोड़कर अब तीस साल तक सत्ता से बेदखल होने की तैयारी करनी चाहिए।'

फ्रेशर पार्टी सेलिब्रिटी नाइट 2026 में अभिनेत्री निया शर्मा ने बिखेरा जलवा

संवाददाता

गुरुग्राम। बेहतरीन शिक्षा और शानदार प्लेसमेंट के लिए अपनी अलग पहचान बना चुके वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट में फ्रेशर पार्टी - सेलिब्रिटी नाइट 2026 के आयोजन में मशहूर टीवी और बॉलीवुड अभिनेत्री निया शर्मा ने अपनी शानदार परफॉर्मेंस और धमाकेदार एनर्जी से समां बांधा ।



वर्ल्ड कॉलेज के रजिस्ट्रार युद्धवीर सिंह लांबा ने जानकारी देते हुए बताया कि फ्रेशर पार्टी - सेलिब्रिटी नाइट 2026 में जैसे ही अभिनेत्री निया शर्मा ने मंच पर कदम रखा, पूरा कैंपस तालियों और सीटियों की गूंज से भर गया, निया शर्मा के जोशीले गानों ने धमाल मचा दिया जिससे सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया, हर कोई मंत्रमुग्ध हो गया जिससे यह इवेंट एक यादगार सेलिब्रेशन बन गया।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के मैनेजिंग ट्रस्टी कुंवर निशांत सिंह ने नए बैच के सभी एम.सी.ए, एम.बी.ए, एम.टेक, बी.टेक, बी.बी.ए, बी.सी.ए और डिप्लोमा के छात्र-छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं व भविष्य में सफलता के लिए आशीर्वाद दिया और छात्रों को पूर्ण मनोयोग, लगन, निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया ।

आपको बता दें कि वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से एफिलिएटेड कॉलेज है और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, भारत सरकार द्वारा अप्रूव्ड कॉलेज है।

वर्ल्ड कॉलेज में बी.टेक के रोबोटिक्स एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल और ऑटोमेशन इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड डिजाइन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड मशीन लर्निंग, सिविल इंजीनियरिंग और मैकेनिकल इंजीनियरिंग आदि और एम.टेक के सिविल में कंप्यूटर एडेड स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस, सिविल इंजीनियरिंग और मैकेनिकल इंजीनियरिंग आदि मार्केट्स और इंडस्ट्री सेक्टर की डिमांड के अनुसार रोजगारयुक्त नए कोर्सेज का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है

लखवाड़ में जनजातीय गौरव दिवस पर लोक संस्कृति की बिखरी छटा

विकासनगर(आरएनएस)। धरती आबा भगवान बिरसा आबा भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे जनजातीय गौरव दिवस (एक से 15 नवंबर) के तहत लखवाड़ गांव में जागरूकता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में जनजातीय संस्कृति, परंपराओं और क्षेत्रीय विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में संस्थान की ओर से डॉ. पंकज चौहान और डॉ. नवीन चंद्र उपस्थित रहे। इस दौरान ग्राम प्रधान संदीप चौहान, वन सरपंच लक्ष्मी देवी, महासू देवता के वजीर विक्रम सिंह चौहान और मीना तोमर को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।ग्राम सभा धनपाऊ (लखवाड़) के सामाजिक कार्यकर्ता नारायण सिंह तोमर ने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं और स्थानीय मुद्दों को विस्तार से उठाया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण महिलाओं और छात्राओं की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां रहीं।गांव की महिलाओं ने पारंपरिक लोकनृत्य प्रस्तुत कर जौनसारी लोक संस्कृति की सुंदर छटा बिखेरी। वहीं जनजातीय आवासीय इंटर कॉलेज की छात्राओं ने भी रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरीं। इस आयोजन के माध्यम से संस्थान के शोधकर्ताओं और ग्रामीणों को एक मंच पर आने का अवसर मिला।

दीपावली पर आठ खाद्य पदार्थों के नमूने लिये

रुद्रपुर (आरएनएस)। दीपावली पर्व को देखते हुए खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने और आम लोगों को सुरक्षित व गुणवत्तायुक्त खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग ने गदरपुर में अभियान चलाया। डीएम नितिन भदौरिया के निर्देश पर सहायक आयुक्त खाद्य संरक्षा ललित मोहन पांडे के नेतृत्व में मेन मार्केट और गूलरभोज रोड स्थित खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान विभागीय टीम ने मूंग दाल बर्फी, पनीर के दो, दूध, मावा रोल, पेड़ा, देसी घी और सरसों के तेल समेत कुल आठ नमूने लिए। सभी नमूनों को जांच के लिए राज्य खाद्य व औषधि प्रयोगशाला रुद्रपुर भेजा जाएगा। जांच रिपोर्ट में मानक विपरीत पाए जाने पर संबंधित कारोबारियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण के दौरान मिठाइयों की ट्रे पर निर्माण व अवसान तिथि अंकित नहीं मिलने पर दो कारोबारियों को नोटिस जारी किए गए। अधिकारियों ने प्रतिष्ठानों में साफ-सफाई रखने और खुले में बिकने वाली मिठाइयों व बेकरी उत्पादों पर निर्माण व अवसान तिथि अंकित करने के निर्देश दिए। खाद्य कारोबारियों को एफएसएसएआई लाइसेंस नंबर वाले बिल रखने, केवल पंजीकृत कारोबारियों से खाद्य सामग्री खरीदने और दैनिक खरीद-बिक्री का रिकॉर्ड सुरक्षित रखने को कहा गया। नियमों का उल्लंघन करने पर कठोर कार्रवाई की चेतावनी दी गई। अभियान में वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी आशा आर्या सहित विभागीय टीम शामिल रही।

गेहूं की बुवाई के लिए खेत तैयार, सहकारी समितियों से डीएपी गायब

रुद्रपुर(आरएनएस)। गेहूं की बुवाई का समय चल रहा है, किसानों ने खेत तैयार कर लिए हैं, लेकिन सहकारी समितियों से डीएपी खाद गायब है। दो सप्ताह से खटीमा की सहकारी समितियों के किसी भी केंद्र पर डीएपी उपलब्ध नहीं होने से किसानों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। खाद के लिए किसान रोजाना समितियों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन उन्हें निराश होकर खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। डीएपी खाद गेहूं की फसल महत्वपूर्ण होती है। इसमें 18 प्रतिशत नाइट्रोजन और 46 प्रतिशत फॉस्फोरस पाया जाता है। इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से बुवाई के समय किया जाता है। ऐसे में समय पर डीएपी नहीं मिलने से गेहूं की बुवाई प्रभावित होने की आशंका गहराने लगी है। चारुबेटा के किसान अशोक दिनकर ने बताया कि उन्होंने खेत की जुताई कर ली है, लेकिन डीएपी खाद नहीं मिलने से बुवाई में दिक्कत आ रही है। वह रोजाना समितियों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन खाद उपलब्ध नहीं होने से उन्हें वापस लौटना पड़ रहा है। इधर, भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष गुरुसेवक सिंह ने खाद की किल्लत पर नाराजगी जताते हुए जल्द से जल्द डीएपी की आपूर्ति सुनिश्चित करने की मांग की है। इफ्को के एरिया इंचार्ज रिषभ ने बताया कि झनकट समिति में बुधवार को एक ट्रक खाद आई है। खटीमा में समितियों में खाद आने में समय लगेगा। केंद्र से अभी खाद स्टेट को नहीं मिली है। वहीं ट्रक उपलब्ध नहीं होने से भी परेशानी है।

बाजार में हर समय पेट्रोलिंग करेगा अग्निशम वाहन

ऋषिकेश (आरएनएस)। दीपावली पर्व पर अग्निशमन विभाग की टीम चौबीस घंटे पेट्रोलिंग करेगी। सुरक्षा के मद्देनजर पटाखों की दुकानों को बाजार क्षेत्र में नहीं लगाने की सलाह अग्निशमन विभाग ने दी है। विभागीय अधिकारियों की मानें तो नगर क्षेत्र में बाजार की सड़कें तंग हैं। उन्होंने एसबीएम इंटर कॉलेज का खेल मैदान इस तरह की दुकानों के लिए उपयुक्त बताया है। आग जैसी घटनाओं की रोकथाम के लिए बाजार और आसपास बैकपैक सेट से हर समय पेट्रोलिंग की व्यवस्था की गई है। हाईप्रेशर और वाटर टेंडर की तैनाती भी मुखर्जी मार्ग त्यौहार में नजर आएगी। छह जवानों की ड्यूटी बाजार क्षेत्र में किसी भी तरह के अप्रिय हादसे को रोकने के लिए लगाई जा रही है। वाटर टेंडर और अन्य वाहनों में पानी भरने के लिए रेलवे रोड पर जल संस्थान कार्यालय और योगनगरी ऋषिकेश रेलवे स्टेशन आउटलेट से मदद ली जाएगी।

तारीखों का इंतजार छोड़ मैदान में उतरे दल

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव की औपचारिक घोषणा होने में अभी वक्त है, लेकिन प्रदेश की राजनीति में चुनावी माहौल पूरी तरह गर्माने लगा है। चुनाव आयोग की तारीखों का इंतजार किए बिना राजनीतिक दलों ने अपने-अपने चुनावी अस्त्र-शस्त्र निकालने शुरू कर दिए हैं। कहीं संगठन को धार दी जा रही है तो कहीं यात्राओं, धरना-प्रदर्शनों और जनसभाओं के जरिये सियासी जमीन तैयार की जा रही है। भाजपा जहां लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल करने के दावे के साथ चुनावी मोर्चेबंदी में जुटी है, वहीं कांग्रेस सत्ता में वापसी के लिए सरकार को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहती। इस बीच क्षेत्रीय दलों और नए राजनीतिक विकल्पों की सक्रियता ने चुनावी मुकाबले को और दिलचस्प बना दिया है।

उत्तराखंड की राजनीति में 2027 का विधानसभा चुनाव महज सत्ता परिवर्तन या सत्ता बरकरार रखने की लड़ाई नहीं रहने वाला। यह भाजपा के राजनीतिक वर्चस्व, कांग्रेस की वापसी की क्षमता और क्षेत्रीय अस्मिता की राजनीति के पुनरुत्थान की भी परीक्षा होगा। चुनाव में अभी कई महीने बाकी हैं, लेकिन राजनीतिक दलों की गतिविधियां बता रही हैं कि असली मुकाबले की पटकथा लिखी जाने लगी है। हर दल अपने तरीके से मतदाताओं के बीच पैठ बनाने और विरोधियों की कमजोरियों को मुद्दा बनाने में जुटा है।

सत्तारूढ़ भाजपा ने 2027 के लिए अभी से कमर कस ली है। पार्टी का लक्ष्य केवल सत्ता में वापसी नहीं, बल्कि लगातार तीसरी बार सरकार बनाकर इतिहास रचना है। संगठन स्तर पर बूथ से लेकर विधानसभा तक चुनावी तैयारियों को व्यवस्थित करने की कोशिशें तेज हो गई हैं। विधानसभा विस्तारक योजना, शक्ति केंद्रों की सक्रियता, संगठनात्मक बैठकों और कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के जरिये पार्टी चुनाव से पहले अपना नेटवर्क मजबूत करना चाहती है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सरकार के कामकाज और विकास योजनाओं को चुनावी हथियार बनाने की तैयारी में हैं। भाजपा नेतृत्व का भरोसा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रभाव, धामी का चेहरा और संगठन की ताकत पार्टी को फिर सत्ता तक पहुंचाएगी। हालांकि पार्टी के सामने बेरोजगारी, महंगाई, पलायन, ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी और भ्रष्टाचार के आरोपों जैसे सवाल भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती सरकार के कामकाज को लेकर जनता के बीच मौजूद नाराजगी को चुनावी नुकसान में बदलने से रोकना होगी।

दूसरी ओर कांग्रेस ने भी भाजपा को खुली चुनौती देने की तैयारी शुरू कर दी है। प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल के नेतृत्व में संगठन को सक्रिय करने, जिला और विधानसभा स्तर पर जिम्मेदारियां तय करने तथा जनसंपर्क अभियान को धार देने की

◆भाजपा की हैट्रिक व कांग्रेस की वापसी के बीच क्षेत्रीय दलों ने तेज की मोर्चेबंदी
◆विधानसभा चुनाव की घोषणा में अभी वक्त, लेकिन सियासी दलों ने तेज की जंग
◆राजनीतिक दलों ने निकालने शुरू कर दिए अपने-अपने चुनावी अस्त्र और शस्त्र

कोशिश हो रही है। भूमि विवाद, कानून व्यवस्था, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा और अंकिता भंडारी प्रकरण जैसे मुद्दों पर कांग्रेस सरकार को कठघरे में खड़ा कर रही है। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा सवाल अपनी एकजुटता साबित करने का है। भाजपा विरोध के लिए मुद्दों की कमी नहीं है, लेकिन क्या पार्टी इन मुद्दों को एक मजबूत चुनावी अभियान में बदल पाएगी? क्या वरिष्ठ नेताओं के बीच समन्वय बना रहेगा? क्या संगठन बूथ स्तर तक सक्रिय हो पाएगा? कांग्रेस की सत्ता वापसी का रास्ता इन्हीं सवालों से होकर गुजरता है। केवल सरकार की विफलताएं गिनाने से चुनाव नहीं जीता जाता, जनता के सामने भरोसेमंद विकल्प भी प्रस्तुत करना पड़ता है।

इस बार उत्तराखंड की चुनावी राजनीति में तीसरे विकल्प की चर्चा भी जोर पकड़ रही है। उत्तराखंड क्रांति दल अपनी पुरानी राजनीतिक जमीन वापस पाने की कोशिश में है। दल ने भाजपा और कांग्रेस से पहले उम्मीदवारों की घोषणा कर चुनावी तैयारी का संकेत दिया है। आम आदमी पार्टी भी संगठन को सक्रिय करने और 2027 के चुनाव में अपनी भूमिका मजबूत करने में जुटी है। इसके अलावा नए राजनीतिक संगठनों और क्षेत्रीय विकल्पों की सक्रियता भी सियासी समीकरणों को प्रभावित कर सकती है। हालांकि उत्तराखंड में तीसरे मोर्चे की राजनीति का इतिहास बहुत उत्साहजनक नहीं रहा है। राज्य गठन के बाद से क्षेत्रीय अस्मिता और स्थानीय मुद्दों के बावजूद कोई क्षेत्रीय दल सत्ता का मजबूत विकल्प नहीं बन पाया। लेकिन इस बार यदि क्षेत्रीय दल अपने बिखरे जनाधार को एकजुट करने और जनता के बीच विश्वसनीय नेतृत्व पेश करने में सफल रहे तो चुनावी मुकाबले का गणित बदल सकता है। तीसरा मोर्चा सरकार बनाने की स्थिति में आए या न आए, लेकिन कई सीटों पर भाजपा और कांग्रेस के समीकरण बिगाड़ने की क्षमता जरूर रखता है।

उत्तराखंड के आगामी चुनाव में मुद्दों की कोई कमी नहीं रहने वाली। बेरोजगारी, पलायन, भर्ती परीक्षाओं की पारदर्शिता, महिला सुरक्षा, अंकिता भंडारी प्रकरण, भू-कानून, मूल निवास, भ्रष्टाचार, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और पहाड़ों में विकास का असंतुलन चुनावी बहस के केंद्र में रहेंगे। इसके साथ ही चारधाम, पर्यटन, आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण भी राजनीतिक दलों की परीक्षा लेंगे।

भाजपा विकास और केंद्र-राज्य की योजनाओं को अपनी उपलब्धि बताएगी तो कांग्रेस सरकार की नाकामियों को चुनावी मुद्दा बनाएगी। क्षेत्रीय दल राज्य गठन की मूल अवधारणा, पहाड़ की अस्मिता और स्थानीय अधिकारों के सवाल को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे। यानी चुनावी मैदान में केवल राजनीतिक दलों का मुकाबला नहीं होगा, बल्कि उत्तराखंड के विकास के अलग-अलग माडल और दावों की भी परीक्षा होगी। फिलहाल चुनाव की औपचारिक घोषणा दूर है, लेकिन राजनीतिक दलों ने अपने-अपने मोर्चे खोल दिए हैं। भाजपा को अपनी सत्ता बचानी है, कांग्रेस को वापसी का रास्ता बनाना है और क्षेत्रीय दलों को अपनी प्रासंगिकता साबित करनी है। इस पूरी लड़ाई में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मतदाता की होगी, जो पिछले पांच वर्षों के कामकाज और अगले पांच वर्षों के वादों के बीच अपना फैसला करेगा। सवाल यह नहीं है कि चुनावी शंखनाद किसने पहले किया, सवाल यह है कि चुनावी रणभूमि में जनता का भरोसा कौन जीतेगा। फिलहाल सभी दल अपनी-अपनी तलवारें भांज रहे हैं, लेकिन सत्ता का रास्ता नारों, यात्राओं और शक्ति प्रदर्शन से नहीं, जनता के बीच बने भरोसे से निकलेगा। 2027 की जंग का पहला दौर शुरू हो चुका है। अभी चुनाव की तारीख तय नहीं हुई है, लेकिन सियासी दलों ने एक-दूसरे को घेरने की तारीख जरूर तय कर ली है।

राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन 20 हजार रुपये करने की मांग

हरिद्वार(आरएनएस)। राज्य आंदोलनकारियों ने पेंशन में बढ़ोतरी को अपर्याप्त बताते हुए इसे बढ़ाकर 20 हजार रुपये प्रतिमाह करने की मांग उठाई है। इसके साथ ही उत्तराखंड परिवहन निगम की बसों में दूसरे राज्यों तक निशुल्क यात्रा और बुजुर्ग आंदोलनकारियों के साथ एक सहायक को भी मुफ्त यात्रा की सुविधा देने की मांग की गई है।

चिन्हित राज्य आंदोलनकारी समिति ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपकर विभिन्न मांगों पर शीघ्र कार्रवाई की अपील की। समिति ने ज्ञापन में राज्य आंदोलनकारियों को मिलने वाले 10 प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण के रास्ते में आ रही बाधाओं को दूर कर इसका लाभ जल्द दिलाने की मांग की। साथ ही सभी तहसील और जिला कार्यालय परिसरों में संबंधित क्षेत्र के चिन्हित राज्य आंदोलनकारियों की सूची उनके चिन्हीकरण क्रमांक के वरिष्ठता क्रम में लगाने का सुझाव दिया। समिति ने प्रदेश के प्रमुख मार्गों, चौराहों और सरकारी भवनों का नामकरण राज्य आंदोलन के शहीदों और आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले दिवंगत नेताओं के नाम पर करने की मांग भी रखी। इसके अलावा हरिद्वार में राज्य आंदोलन के शहीदों की स्मृति में गंगा घाटों का निर्माण कराने की मांग की गई। ज्ञापन देने वालों में समिति के जिलाध्यक्ष सूर्यकांत भट्ट, शहर अध्यक्ष विनोद डंडरियाल, जिला महामंत्री रोहित प्रताप सिंह, साधना नवानी, बसंती पटवाल, कमला पांडे, बिमला नैनवाल, आनंदी नेगी, कमला ढोंडियाल, राजेश गुप्ता, आनंद सिंह नेगी और भीमसेन रावत शामिल रहे। इस दौरान सावक मंच के संयोजक चंद्र मोहन कौशिक और शरद कुमार भी मौजूद रहे।

नोटिस का जवाब नहीं देने वाले परिवार विस्थापन से होंगे बाहर: डीएम

नई टिहरी (आरएनएस)। आपदा प्रभावित परिवारों के विस्थापन की प्रक्रिया में नोटिस के बावजूद जवाब नहीं देने वाले परिवारों को अब प्रक्रिया से बाहर किया जाएगा। जिलाधिकारी नितिका खंडेलवाल ने घनसाली और प्रतापनगर तहसील के आपदा प्रभावित परिवारों के पुनर्वास की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को इस संबंध में निर्देश दिए। उन्होंने बेलुंदा गांव में विस्थापन के लिए भूमि अनुपयुक्त पाए जाने के मामले में भी ग्रामीणों के साथ बैठक कर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। बैठक में एसडीएम मंजू राजपूत ने बताया कि मेदू सिंदवाल गांव के कुल 25 प्रभावित परिवारों में से 19 को पहली किस्त और दो परिवारों को दूसरी किस्त का भुगतान किया जा चुका है। वहीं, चार परिवारों की पत्रावलियां स्वीकृति के लिए जिला कार्यालय भेजी गई हैं। उन्होंने बताया कि महरगांव तल्ला, गंगेरी उर्फ पनेली और सिंधवाल गांव के कुछ परिवारों को तीन बार नोटिस देने के बावजूद कोई जवाब नहीं मिला है। इस पर डीएम ने संबंधित परिवारों को विस्थापन प्रक्रिया से बाहर करने के निर्देश दिए। वहीं, प्रतापनगर तहसील क्षेत्र के बेलुंदा गांव में विस्थापन के लिए चिह्नित भूमि उपयुक्त नहीं पाए जाने पर तहसीलदार को ग्रामीणों के साथ बैठक कर विस्तृत रिपोर्ट देने को कहा। बैठक में एडीएम शैलेंद्र सिंह नेगी, भूवैज्ञानिक रवि नेगी, तहसीलदार हरीश जोशी आदि मौजूद रहे।

गुरु नानक जयंती पर हरकी पैड़ी में स्नान की मांगी अनुमति

हरिद्वार(आरएनएस)। श्री गुरु नानक देव जी धर्म प्रचार समिति ने गुरु नानक जयंती पर हरकी पैड़ी में गंगा स्नान की अनुमति देने की मांग की है। इस संबंध में समिति पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी मयूर दीक्षित और एसएसपी नवनीत सिंह भुल्लर को ज्ञापन सौंपा। समिति के संरक्षक बाबा पंडत और अध्यक्ष सूबा सिंह ढिल्लों ने कहा कि हर वर्ष दिनारपुर, एथल, सहदेवपुर, सुभाषगढ़ और पथरी समेत आसपास के गांवों से सैकड़ों की संख्या में सिख संगत गुरु नानक प्रकाश पर्व पर हरकी पैड़ी में गंगा स्नान के लिए जाती है। आरोप लगाया कि पुलिस प्रशासन की ओर से डांडी चौक पर संगत को रोक दिया जाता है। उन्होंने कहा कि प्रकाश पर्व पर हरकी पैड़ी में स्नान करना सिख समाज की धार्मिक आस्था से जुड़ा है। ऐसे में धार्मिक भावनाओं को देखते हुए प्रशासन को स्नान की अनुमति देनी चाहिए। पदाधिकारियों ने कहा कि सिख समाज पिछले कई वर्षों से गुरुद्वारा ज्ञान गोदड़ी के मूल स्थान की मांग को लेकर प्रेमनगर पुल के पास शांतिपूर्वक धरना दे रहा है, लेकिन अब तक मांग पूरी नहीं हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि हरकी पैड़ी में स्नान से रोके जाने से समाज की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं और लोगों में रोष है। इस अवसर पर सतपाल सिंह चौहान, उज्ज्वल सिंह सेठी, अनूप सिंह सिद्धू, जसकरण सिंह, इंदरजीत सिंह, सुखदेव सिंह, हरभजन सिंह और करमजीत सिंह आदि मौजूद रहे।

सू- दोकू क्र.60

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.59 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

बच्चों को प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले तो निखर सकती है उनकी क्षमता

अल्मोड़ा(आरएनएस)। ग्राम सुनाड़ी स्थित चित्रा एकेडमी में हस्तकला एवं विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला पंचायत अल्मोड़ा की अध्यक्ष हेमा गैड़ा रहीं, जबकि अध्यक्षता अभिभावक शिक्षक संघ के अध्यक्ष गोपाल सिंह महरा ने की।

कार्यक्रम का संचालन अध्यापिकाओं हेमा सेन और किरन जोशी ने संयुक्त रूप से किया। विद्यालय परिसर पहुंचने पर प्रधानाचार्य रेनू धानक, प्रबंधन समिति, शिक्षकों और छात्र-छात्राओं ने मुख्य अतिथि का फूल-मालाओं से स्वागत किया। प्रतियोगिता के दौरान छात्र-छात्राओं की ओर से तैयार हस्तनिर्मित कलाकृतियों और विज्ञान मॉडलों की प्रदर्शनी लगाई गई। बच्चों ने मिट्टी, कागज, लकड़ी, बेकार सामग्री और स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर आकर्षक कलाकृतियां तैयार कीं। विज्ञान मॉडलों में भी बच्चों की सृजनात्मक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखने को मिला। मुख्य अतिथि हेमा गैड़ा ने विभिन्न स्टॉलों का निरीक्षण कर छात्र-छात्राओं से उनके मॉडलों और कलाकृतियों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने बच्चों की प्रतिभा और रचनात्मकता की सराहना की। इस दौरान छोटे बच्चों ने लोकनृत्य, पहाड़ी गीत, देशभक्ति गीत, कविता पाठ और नाटक प्रस्तुत किए। मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया और तालियों के साथ बच्चों का उत्साह बढ़ाया गया।

अपने संबोधन में जिला पंचायत अध्यक्ष हेमा गैड़ा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। जरूरत उन्हें उचित मंच और मार्गदर्शन देने की है। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ उनकी रचनात्मक सोच को भी विकसित करती हैं। इस अवसर पर हेमा गैड़ा ने विद्यालय के विकास के लिए 2.5० लाख रुपये देने की घोषणा की। प्रधानाचार्य और प्रबंधन समिति ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि सहित अन्य अतिथियों ने छात्र-छात्राओं, अभिभावकों और ग्रामीणों को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कलाकृतियां और विज्ञान मॉडल तैयार करने वाले छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। अंत में विद्यालय के संरक्षक पान सिंह धानक ने मुख्य अतिथि, अतिथियों, अभिभावकों और ग्रामीणों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में क्षेत्र के गणमान्य लोगों के साथ बड़ी संख्या में अभिभावक और ग्रामीण मौजूद रहे।

श्यामपुर रेंज में बढ़ाई गश्त, वन्यजीवों के शिकार पर रहेगी नजर

हरिद्वार(आरएनएस)। त्योहारी सीजन में वन्यजीवों के अवैध शिकार और वन संपदा को नुकसान पहुंचाने की आशंका के मद्देनजर श्यामपुर वन रेंज में निगरानी बढ़ा दी गई है। वन विभाग ने जंगल के दुर्गम और दूरस्थ क्षेत्रों में लंबी दूरी की सघन गश्त शुरू कर दी है। इसके तहत वन कर्मियों की टीमें संवेदनशील और अति संवेदनशील इलाकों में लगातार निगरानी कर रही हैं। गश्ती दल जंगल के रास्तों, नदी-नालों और वन्यजीवों के आवागमन वाले स्थानों पर विशेष नजर रख रहे हैं। पूर्व में संवेदनशील रहे क्षेत्रों को भी गश्त के दायरे में शामिल किया गया है। वन कर्मियों को प्रत्येक बीट का निरीक्षण करने और संदिग्ध लोगों की आवाजाही, अवैध प्रवेश व शिकार की आशंका पर नजर रखने के निर्देश दिए गए हैं। किसी भी असामान्य गतिविधि की सूचना तत्काल उच्चाधिकारियों को देने को कहा गया है।वन क्षेत्राधिकारी विवेक जोशी ने बताया कि त्योहारों के दौरान वन एवं वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए गश्त बढ़ाई गई है। लंबी दूरी की गश्त से जंगल के दूरस्थ हिस्सों तक निगरानी सुनिश्चित की जा रही है।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने शहर में चलाया अभियान

हरिद्वार(आरएनएस)। दीपावली पर मिलावटी और अधोमानक खाद्य पदार्थों की बिक्री रोकने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग ने शहर में अभियान चलाया। सचल खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला के माध्यम से मिठाई, दूध, दही, पनीर, केक, पेस्ट्री और अन्य खाद्य पदार्थों के कुल 81 नमूनों की मौके पर जांच की गई। इनमें 11 नमूने अधोमानक पाए गए। विभागीय टीम ने संबंधित प्रतिष्ठानों से अधोमानक खाद्य सामग्री तत्काल हटवा दी।

खाद्य सुरक्षा आयुक्त विनय शंकर पांडेय और जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देश पर सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा महिमानंद जोशी और उपायुक्त प्रयोगशाला बीरेंद्र सिंह बिष्ट के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया। नगर निगम क्षेत्र के ऋषिकुल, गोविंदपुरी, रानीपुर मोड़ और प्रेमनगर आश्रम क्षेत्र में मिठाई की दुकानों, बेकरियों, डेयरियों और अन्य खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच की गई।

टीम ने मिठाइयों, पनीर, दूध, दही, केक, पेस्ट्री, सॉस, मसाले, तेल, बेसन, दालों और कन्फेक्शनरी उत्पादों के नमूने लेकर सचल प्रयोगशाला में जांच की। जांच में 11 नमूने अधोमानक मिलने पर संबंधित खाद्य सामग्री को तत्काल प्रतिष्ठानों से हटवाया गया। हालांकि, अभियान में लिए गए नमूनों की मौके पर हुई जांच के परिणामों को लेकर विभाग ने अधोमानक पाए गए खाद्य पदार्थों की अलग-अलग श्रेणी और नाम का ब्योरा नहीं दिया। अभियान के दौरान वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी कैलाश चंद्र टम्टा ने मिठाई और बेकरी प्रतिष्ठानों में उत्पादों पर निर्माण और अवसान तिथि अंकित होने की भी जांच की। विभाग के अनुसार, अधिकांश प्रतिष्ठानों पर मिठाइयों और बेकरी उत्पादों पर नियमानुसार दोनों तिथियां अंकित मिलीं। संयुक्त टीम में वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी रुड़की नगर निगम योगेंद्र पांडेय, जूनियर फूड एनालिस्ट अनुराग मियां और लैब सहायक गौरव कुमार शामिल रहे।

दीपावली पर बच्चों को बांटे 150 स्कूल बैग, खिले चेहरे

हरिद्वार(आरएनएस)। दीपावली पर खड़खड़ी स्थित प्राथमिक विद्यालय संख्या 42 और 43 में 150 बच्चों को स्कूल बैग वितरित किए गए। कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में भाजयुमो जिला मंत्री अर्श नैय्यर और भाजपा नेता आनंद सागर ने बैग बांटे। उन्होंने बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में आलोक शर्मा, विमल त्यागी, विशाल भारद्वाज और अरिहंत जैन मौजूद रहे।

युवा महोत्सव में युवाओं ने बिखेरी लोक संस्कृति की छटा

रुद्रपुर(आरएनएस)। जिला युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल विभाग के तत्वावधान में युवा भवन रुद्रपुर में जनपद स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव में जनपद के समस्त विकासखंडों से आए प्रतिभाशाली युवक-युवतियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग कर अपनी कला, प्रतिभा एवं सांस्कृतिक अभिरुचि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मेयर विकास शर्मा रहे। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर एवं उसकी प्रगति के आधार स्तंभ होते हैं। युवाओं की प्रतिभा को उचित मंच प्रदान करना और उनकी रचनात्मक एवं सांस्कृतिक क्षमताओं को प्रोत्साहित करना ऐसे आयोजनों का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। कार्यक्रम में जनपद के विभिन्न विकासखंडों से बड़ी संख्या में युवक-युवतियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। लोकगीत में खटीमा, काशीपुर, बाजपुर, काशीपुर, जसपुर, सितारगंज आदि ब्लॉकों की टीमों ने हिस्सा लिया। लोकनृत्य में खटीमा, बाजपुर, काशीपुर, जसपुर, सितारगंज की टीमों ने प्रस्तुति दी। नुक्कड़ नाटक में रुद्रपुर, खटीमा, बाजपुर, काशीपुर, जसपुर की टीमों ने भाग लिया।

युवा महोत्सव में विभिन्न विधाओं में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें लोकगीत, लोकनृत्य और नुक्कड़ नाटक प्रमुख रहे। प्रतिभागियों ने पारंपरिक लोकगीतों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। लोकनृत्य में प्रतिभागियों ने लोक संस्कृति एवं पारंपरिक नृत्य शैलियों का आकर्षक प्रदर्शन किया। नुक्कड़ नाटक के जरिए युवाओं ने सामाजिक संदेश भी दिए।लोकगीत प्रतियोगिता में खटीमा (भारू खड़ी बोली) ने पहला, खटीमा के नोजणे पाहलैक स्कूल ने दूसरा और रुद्रपुर को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता में सरदार भगत सिंह महाविद्यालय रुद्रपुर ने दूसरा, जसपुर को तीसरा स्थान मिला। लोकनृत्य प्रतियोगिता में भी विभिन्न विकासखंडों की टीमों ने शानदार प्रदर्शन किया। जिला युवा कल्याण अधिकारी भूपेंद्र सिंह रावत ने कहा कि युवा महोत्सव युवाओं की प्रतिभा को निखारने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने का सशक्त मंच है। इस दौरान विपिन गौतम, अमित सोनी, हरीश धनाई, नंद किशोर जोशी, धीरज पांडे सहित विभाग के अधिकारी, आदि मौजूद रहे।

स्व. रणजीत सिंह वर्मा की पुस्तक का विमोचन, व्यक्तित्व एवं योगदान को किया याद



संवाददाता

देहरादून। पूर्व विधायक स्वर्गीय रणजीत सिंह वर्मा की पुस्तक के विमोचन के शुभ अवसर पर स्वर्गीय रणजीत सिंह वर्मा के व्यक्तित्व, विचारों, सामाजिक सरोकारों एवं सार्वजनिक जीवन में उनके महत्वपूर्ण योगदान को भावपूर्वक स्मरण किया गया। वक्ताओं ने कहा कि स्वर्गीय वर्मा जी का जीवन, उनकी विचारधारा और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सदैव प्रेरणास्रोत बनी रहेगी।

स्व0 रणजीत सिंह वर्मा जी की स्मृतियों को अक्षुण रखने के लिए समाजसेवी एवं राज्य आन्दोलनकारी मोहन सिंह खत्री द्वारा प्रत्येक वर्ष नि:शुल्क रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाता है।

उनकी पुस्तक का विमोचन केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं, बल्कि उनके विचारों, अनुभवों और जीवन की स्मृतियों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने की एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल है। यह पुस्तक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने के साथ-साथ उनके विचारों से समाज को प्रेरणा देने का कार्य करेगी।

इस अवसर पर स्वर्गीय रणजीत सिंह वर्मा जी को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उनके परिवारजनों को इस महत्वपूर्ण पहल के लिए साधुवाद दिया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, काबिना मंत्री सुबोध उनियाल भोले महाराज, मंगला माता, पुस्तक के सम्पादक गम्भीर सिंह पाली, उनके सुपुत्र अजय वर्मा, नरेन्द्र सिंह चौहान, अरूण वर्मा, पूनम पुंडीर, मनोज नौटियाल, धर्मेन्द्र रावत, चण्डीप्रसाद थपलियाल, राधे बहुगुणा, डॉ0 अतुल शर्मा, राज्य आन्दोलनकारी प्रदीप कुकरेती, पुष्पलता शर्मा, द्वारिका बिष्ट, मोहन रावत, गौरव खंडूरी, हिमांशु नेगी आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भाजपा का मिशन-65 एक्टिवेट..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

जोड़ पाए। सत्ता में लगातार दो कार्यकाल पूरे करने के बाद स्वाभाविक रूप से सरकार के प्रति जनअपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। ऐसे में केवल कांग्रेस पर हमले और चुनावी नारों के सहारे 65 सीटों का लक्ष्य हासिल करना आसान नहीं होगा। अमित शाह ने उत्तराखंड से 65 पार का नारा देकर चुनावी मुकाबले की दिशा तय कर दी है। अब इस लक्ष्य को जमीन पर उतारने की जिम्मेदारी मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट और पूरी संगठनात्मक टीम की होगी। भाजपा के लिए यह चुनाव केवल सरकार बचाने का नहीं, बल्कि लगातार तीसरी बार सत्ता हासिल कर राजनीतिक इतिहास बनाने का अवसर भी है। लेकिन राजनीति में लक्ष्य घोषित करना और उसे हासिल करना दो अलग-अलग बातें हैं। 2017 में 57 और 2022 में 47 सीटें जीतने वाली भाजपा के सामने अब अपने ही पुराने प्रदर्शन को पीछे छोड़ने की चुनौती है। 65 सीटों का मतलब है कि पार्टी को लगभग पूरे प्रदेश में एकतरफा प्रदर्शन करना होगा। फिलहाल भाजपा ने मिशन-65 का बिगुल बजा दिया है। दिल्ली ने लक्ष्य तय कर दिया है, देहरादून ने तैयारी शुरू कर दी है। अब देखना यह है कि चुनावी शोर के बीच भाजपा जनता की नाराजगी को कितना कम कर पाती है और 65 पार का सपना सियासी हकीकत में कितना बदलता है।

कांग्रेस ने भाजपा के दावों की खोली..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

अमित शाह का देहरादून दौरा भाजपा के लिए केवल स्थापना दिवस का कार्यक्रम नहीं था। इसके जरिए पार्टी ने 2027 के विधानसभा चुनाव का एजेंडा सामने रखने की कोशिश की। 65 पार का लक्ष्य घोषित कर कार्यकर्ताओं को चुनावी मैदान में उतरने का संदेश दिया गया। लेकिन कांग्रेस इस लक्ष्य को भाजपा की राजनीतिक महत्वाकांक्षा बताते हुए जनता के वास्तविक मुद्दों से ध्यान भटकाने की कोशिश करार दे रही है।

अब इस सियासी टकराव में असली सवाल यह है कि क्या भाजपा का 65 पार का नारा जमीन पर जनसमर्थन में बदल पाएगा या कांग्रेस सरकार के खिलाफ उठ रहे सवालों को चुनावी मुद्दा बनाने में सफल होगी? अमित शाह के दौरे को भाजपा भले ही चुनावी बिगुल बता रही हो, लेकिन कांग्रेस ने इसे फ्लाप बताकर साफ कर दिया है कि 2027 की जंग में सत्ता पक्ष को विपक्ष के हमलों से राहत मिलने वाली नहीं है। उत्तराखंड की राजनीति में अब मंचों पर भीड़, नेताओं के भाषण और चुनावी नारों से आगे जनता के सवाल निर्णायक होने जा रहे हैं। भाजपा के सामने अपनी उपलब्धियों को साबित करने की चुनौती है तो कांग्रेस के सामने विरोध को विश्वसनीय राजनीतिक विकल्प में बदलने की। फिलहाल अमित शाह के दौरे ने चुनावी तापमान जरूर बढ़ा दिया है।

पब्लिक के नौकर हो, भौकाल नहीं!

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। लोकतंत्र में सबसे बड़ा कौन है? जनता या जनता के पैसे से चलने वाली सरकारी कुर्सी? संविधान का जवाब साफ है, जनता सर्वोपरि है। लेकिन सरकारी दफ्तरों की हकीकत कई बार इस संवैधानिक सच्चाई को उलटती नजर आती है। यहां कुर्सी पर बैठते ही कुछ अधिकारियों के तेवर बदल जाते हैं। जनता अपनी समस्या लेकर आती है तो उसे समाधान कम और रुतबा ज्यादा देखने को मिलता है। फाइलें महीनों धूल फांकती हैं, आवेदन दफ्तरों में भटकते हैं और आम आदमी एक अदद हस्ताक्षर के लिए अधिकारियों के आगे-पीछे चक्कर काटता रहता है। नागपुर की जनसुनवाई में युवक और आईएएस अधिकारी के बीच हुई तीखी बहस ने इसी अफसरशाही के चेहरे पर पड़ा पर्दा खींच दिया है।

◆नागपुर की जनसुनवाई में युवक ने आईएएस को दिखाया आईना
◆एक आवाज ने पूरी अफसरशाही के अहंकार पर खड़े किए सवाल
◆जनता दफ्तरों में धक्के खाए और साहब कुर्सी का भौकाल दिखाएं

युवक के शब्द थे-पब्लिक के नौकर हो, भौकाल नहीं! यह महज गुस्से में निकला एक वाक्य नहीं, बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ आम आदमी की तल्ख टिप्पणी है, जहां लोकसेवक होने का अर्थ कई बार जनता पर हुक्म चलाना समझ लिया जाता है। युवक ने जिस अंदाज में आईएएस अधिकारी को उनकी जिम्मेदारी याद दिलाई, उसने एक बुनियादी सवाल खड़ा कर दिया है- आखिर सरकारी पद पर बैठने के बाद अधिकारी खुद को जनता का जवाबदेह सेवक समझते हैं या जनता को अपने दरवाजे पर खड़ा याचक? देश में अफसरशाही का एक बड़ा संकट उसका बढ़ता हुआ अहंकार है। व्यवस्था में अधिकार जरूरी हैं, लेकिन अधिकार के साथ जवाबदेही भी उतनी ही जरूरी है। दुर्भाग्य यह है कि कई जगह अधिकार तो दिखाई देते हैं, जवाबदेही गायब रहती है। जनता को नियमों का पाठ पढ़ाया जाता है, लेकिन उन्हीं नियमों के तहत समय पर काम करने की जिम्मेदारी पर चुप्पी साध ली जाती है।

सरकारी दफ्तरों में आम आदमी की हालत किसी से छिपी नहीं है। कभी फाइल गायब, कभी दस्तावेज अधूरे, कभी अधिकारी नदारद तो कभी कर्मचारी उपलब्ध नहीं। एक विभाग से दूसरे विभाग तक दौड़ते-दौड़ते नागरिक की चप्पल घिस जाती है, लेकिन उसकी समस्या का समाधान नहीं होता। जिस काम के लिए सरकार ने व्यवस्था बनाई है, उसी काम के लिए नागरिक को व्यवस्था के सामने गिड़गिड़ाना पड़ता है। सरकारी अधिकारियों की सुविधाओं पर खर्च होने वाला पैसा जनता की जेब से आता है। उनका वेतन, सरकारी वाहन, आवास और प्रशासनिक तामझाम किसी की निजी कमाई नहीं, सार्वजनिक संसाधन हैं। फिर जनता के साथ ऐसा व्यवहार क्यों, मानो वह सरकारी दफ्तर में अपना अधिकार लेने नहीं, किसी अधिकारी से भीख मांगने आई हो? लोकतंत्र में अधिकारी का पद बड़ा हो सकता है, लेकिन वह जनता से बड़ा नहीं हो सकता। आईएएस होना प्रशासनिक जिम्मेदारी है, सामाजिक श्रेष्ठता का प्रमाणपत्र नहीं। संविधान ने किसी अधिकारी को जनता पर शासन करने के लिए नहीं, कानून के मुताबिक प्रशासन चलाने और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए जिम्मेदारी सौंपी है।

सरकारें जनसुनवाई को सुशासन का सबसे बड़ा औजार बताती हैं। हर शिकायत के निस्तारण के दावे किए जाते हैं। ऑनलाइन पोर्टल, हेल्पलाइन और समीक्षा बैठकों का प्रचार होता है। लेकिन सवाल यह है कि शिकायतकर्ता को बार-बार अपनी समस्या लेकर उन्हीं दफ्तरों में क्यों पहुंचना पड़ता है? शिकायत दर्ज होने और शिकायत का समाधान होने के बीच इतनी लंबी दूरी क्यों है? जनसुनवाई का मतलब सिर्फ जनता को बुलाकर उसकी शिकायत सुन लेना नहीं है। इसका मतलब है जिम्मेदारी तय करना, कार्रवाई करना और शिकायतकर्ता को परिणाम बताना। यदि अधिकारी के सामने शिकायत रखने के बाद भी नागरिक को राहत नहीं मिलती तो ऐसी जनसुनवाई महज प्रशासनिक रस्म अदायगी है। नागपुर की घटना को केवल एक युवक की नाराजगी या अधिकारी से बहस के रूप में देखना बड़ी भूल होगी। यह उस बेचैनी का संकेत है, जो सरकारी व्यवस्था से बार-बार निराश हो रहे आम नागरिक के भीतर जमा होती जा रही है। हालांकि किसी भी संवाद में मर्यादा और संयम जरूरी है, लेकिन मर्यादा का अर्थ यह भी नहीं कि जनता अपनी परेशानी और नाराजगी व्यक्त करना छोड़ दे।

अधिकारियों को आलोचना से डरने के बजाय आत्ममंथन करना चाहिए। जनता सवाल पूछे तो उसे असम्मान नहीं, लोकतांत्रिक अधिकार समझना चाहिए। जो अधिकारी अपनी आलोचना सुनने का धैर्य नहीं रखता, उससे जनसमस्याओं के प्रति संवेदनशीलता की उम्मीद कैसे की जा सकती है? अब वक्त आ गया है कि सरकारी तंत्र में जवाबदेही को केवल भाषणों और सरकारी आदेशों से बाहर निकालकर जमीन पर उतारा जाए। हर शिकायत के निस्तारण की समयसीमा हो, लापरवाही पर जिम्मेदारी तय हो और नागरिक को अपने ही अधिकार के लिए दफ्तरों की परिक्रमा न करनी पड़े।

आखिर में बात सिर्फ इतनी है- सरकारी कुर्सी किसी की जागीर नहीं, जनता की अमानत है। अधिकारी पांच साल के लिए चुने गए जनप्रतिनिधि नहीं होते, लेकिन उनकी नियुक्ति भी जनता की सेवा के लिए ही होती है। पद की गरिमा जनता को डराने में नहीं, जनता का भरोसा जीतने में है। साहब! याद रखिए, आपकी कुर्सी जनता से है, जनता आपकी कुर्सी से नहीं। आप लोकसेवक हैं, लोकतंत्र के मालिक नहीं। जनता के सवालों से इतना परहेज है तो फिर जनसेवा का दावा किस मुंह से करते हैं?

'भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रदेशव्यापी हस्ताक्षर अभियान चलायेगी कांग्रेस'

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों पर लग रहे भ्रष्टाचार के आरोपों के खिलाफ अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर प्रदेशभर में व्यापक हस्ताक्षर अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। इस अभियान के तहत दिनांक 10 नवम्बर 2026 से 30 नवम्बर 2026 तक प्रदेश के सभी जिला, ब्लाक एवं नगर मुख्यालयों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

उपरोक्त जानकारी देते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी की प्रवक्ता डॉ0 प्रतिमा सिंह ने बताया कि अभियान के प्रथम चरण में दिनांक 10 नवम्बर से 15 नवम्बर 2026 तक प्रदेश के सभी जिला, ब्लाक एवं नगर स्तर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा कैबिनेट मंत्री श्रीमती रेखा आर्य, गणेश जोशी एवं डॉ. धन सिंह रावत के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर विशेष हस्ताक्षर अभियान चलाया जाएगा। यह हस्ताक्षर अभियान निर्धारित पम्पलेट के साथ-साथ 6×15 फीट के बैनर पर भी संचालित किया जाएगा। इसके लिए पम्पलेट एवं बैनर के नमूने सभी सम्बन्धित पदाधिकारियों को उपलब्ध कराये जाएंगे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने सभी जिला एवं ब्लाक इकाइयों को निर्देशित किया है कि हस्ताक्षरयुक्त बैनर एवं पम्पलेट दिनांक 20 नवम्बर 2026 तक अनिवार्य रूप से प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में जमा करा दें। अभियान के अगले चरण में दिनांक 23 नवम्बर 2026 को प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा की उपस्थिति में प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय से लोकभवन (राजभवन) तक पदयात्रा निकाली जाएगी। इस पदयात्रा के माध्यम से प्रदेशभर से एकत्रित हस्ताक्षरयुक्त बैनर एवं पम्पलेट महामहिम राज्यपाल महोदय को सौंपकर मुख्यमंत्री एवं सम्बन्धित मंत्रियों के खिलाफ लगाए जा रहे भ्रष्टाचार के आरोपों की निष्पक्ष जांच कराये जाने तथा जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग की जाएगी।

इसी क्रम में दिनांक 25 नवम्बर से 30 नवम्बर 2026 तक प्रदेश के सभी जिला एवं महानगर मुख्यालयों में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से भ्रष्टाचार के खिलाफ सांकेतिक अदालतें आयोजित की जाएंगी। इन कार्यक्रमों के माध्यम से भाजपा सरकार में कथित भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग एवं जनहित से जुड़े मुद्दों को जनता के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाया जाएगा तथा सरकार की जवाबदेही तय करने की मांग की जाएगी।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने अभियान को सफल बनाने के लिए जिला प्रभारियों एवं विधानसभा प्रभारियों को अपने-अपने प्रभार वाले जिलों एवं ब्लाकों में कार्यक्रमों का संयोजक नियुक्त किया है। सभी जिला, महानगर, ब्लाक एवं नगर कांग्रेस कमेटियों तथा पार्टी के वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं से अभियान में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कहा कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों को लेकर जनता में व्याप्त आक्रोश को संगठित आवाज देने और सरकार को जवाबदेह बनाने के लिए कांग्रेस पार्टी सड़क से सदन तक संघर्ष जारी रखेगी।

हमारे घरों में जलने वाले दीपों के पीछे सैनिकों का त्याग और उनके परिवारों का समर्पण: मुख्यमंत्री



हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज गढ़वाल ग्रीन्स प्रशिक्षण मैदान, गढ़ीकैंट, देहरादून में आयोजित दीपावली मिलन कार्यक्रम में वीर जवानों के साथ दीपावली की खुशियाँ साझा कीं। मुख्यमंत्री ने जवानों को अपने हाथों से मिठाई खिलाई और उन्हें दीपावली की शुभकामनाएँ दीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गढ़वाल रेजीमेंट के वीर जवानों के बीच आकर उन्हें अपने परिवार के साथ दीपावली मनाने जैसी अनुभूति हो रही है। उन्होंने कहा कि त्योहारों की वास्तविक खुशी अपनों के बीच होती है और सैनिक उनके लिए परिवार का ही हिस्सा हैं। पर्व के अवसर पर अपने घर-परिवार से दूर रहकर देश की रक्षा करना कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय उदाहरण है। जब देशवासी अपने परिवारों के साथ दीपावली मनाते हैं, तब हमारे वीर जवान सीमाओं पर मुस्तैद रहकर उनकी खुशियों और सुरक्षा का दायित्व निभाते हैं। हमारे घरों में जलने वाले दीपों के पीछे सैनिकों का त्याग और उनके परिवारों का समर्पण भी है। मुख्यमंत्री ने अपने सैनिक परिवार से जुड़ी स्मृतियाँ साझा करते हुए कहा कि उनका जन्म एक सैनिक परिवार में हुआ है। उनके पिता ने सेना में रहते हुए देशसेवा, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा के जो संस्कार दिए, वे आज भी उनके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी हैं। उन्होंने कहा कि उनके पिता अक्सर गढ़वाल रेजीमेंट के वीर सैनिकों की शौर्यगाथाएँ सुनाया करते थे। विशेष रूप से महावीर चक्र से सम्मानित अमर शहीद जसवंत सिंह रावत के अदम्य साहस और बलिदान का उल्लेख करते थे। वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध में नूरानांग मोर्चे पर उनका पराक्रम भारतीय सैन्य इतिहास का गौरवशाली अध्याय है। आज उसी गौरवशाली रेजीमेंट के जवानों के बीच उपस्थित होकर उन्हें अपने पिता की बातें याद आ रही हैं। मुख्यमंत्री ने अमर शहीद जसवंत सिंह रावत सहित मातृभूमि की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले सभी वीर सैनिकों को नमन किया। उन्होंने कहा कि गढ़वाल रेजीमेंट का इतिहास अदम्य साहस, अनुशासन, राष्ट्रभक्ति और बलिदान की गौरवगाथा है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर स्वतंत्रता के बाद विभिन्न युद्धों एवं सैन्य अभियानों तक रेजीमेंट के जवानों ने अपनी वीरता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि देहरादून में निर्माणाधीन सैन्यधाम का कार्य भी लगभग पूर्ण हो चुका है।

यह सैन्यधाम देश की रक्षा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों के शौर्य, त्याग और बलिदान का प्रतीक बनेगा।

भारत स्काउट एवं गाइड स्थापना दिवस पर मुख्यमंत्री को स्कार्फ पहनाकर सम्मानित किया

हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से आज मुख्यमंत्री आवास में भारत स्काउट एवं गाइड के स्थापना दिवस पर संस्था के उत्तराखण्ड प्रतिनिधिमंडल ने भेंट की। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री को स्कार्फ पहनाकर सम्मानित किया तथा स्थापना दिवस का फ्लैग स्टीकर लगाया।

मुख्यमंत्री ने भारत स्काउट एवं गाइड के स्थापना दिवस पर संस्था से जुड़े सभी पदाधिकारियों, स्काउट्स एवं गाइड्स को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि युवाओं में अनुशासन, सेवा भावना, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता विकसित करने में स्काउट एवं गाइड की महत्वपूर्ण भूमिका है। आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में संस्था के प्रयास सराहनीय हैं। इस अवसर पर



प्रादेशिक सचिव रविन्द्र मोहन काला ने मुख्यमंत्री को संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 7 नवम्बर 1950 को भारत स्काउट एवं गाइड का गठन किया गया था। उन्होंने उत्तराखण्ड में संचालित हैम रेडियो पायलट प्रोजेक्ट तथा युवा आपदा मित्र कार्यक्रम के अंतर्गत स्वयंसेवकों को दिए जा रहे आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण की भी जानकारी दी।

इस अवसर पर अपर प्रादेशिक मुख्य आयुक्त श्रीमती बंदना गर्ब्याल, प्रादेशिक सचिव रविन्द्र मोहन काला, प्रादेशिक वित्त समिति के सदस्य जे.पी. काला, प्रादेशिक संगठन आयुक्त श्रीमती अंजलि चन्दोला, प्रशासनिक अधिकारी अरुण राय, सहायक प्रादेशिक प्रशिक्षण आयुक्त राहुल प्रसाद रतूड़ी तथा गाइड कु. योजना एवं कु. इशा ठाकुर उपस्थित थीं।

जो मेरे लिए संकट खड़ा करेगा, मैं उसके लिए संकट बन जाऊंगा: दिलजीत दोसांझ

संवाददाता

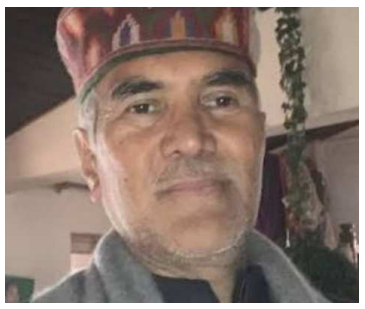
इंदौर। पंजाबी सिंगर और बॉलीवुड एक्टर दिलजीत दोसांझ का इंदौर में होने वाला कॉन्सर्ट अब तय कार्यक्रम के मुताबिक 15 नवंबर को होगा। कॉन्सर्ट को लेकर चल रहे विवाद और खालिस्तानी आर्मी की धमकियों के बीच महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने नई आयोजक एजेंसी को कार्यक्रम कराने की अनुमति देने की बात कही है। कॉन्सर्ट से पहले धमकियों को लेकर सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हैं। इसी बीच दिलजीत दोसांझ ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर इंदौर आने का भरोसा दिया है। उन्होंने कहा कि 15 तारीख को वह इंदौर आ रहे हैं और चाहे कुछ भी हो जाए, उनका इंदौर आने का इरादा नहीं बदलेगा। दिलजीत ने कहा कि वह किसी भी तरह की धमकी से डरने वाले नहीं हैं। इंदौर पहुंचकर सबसे पहले पोहा खाने की बात भी उन्होंने मजाकिया अंदाज में कही। धमकी देने वालों को जवाब देते हुए सिंगर ने कहा कि जो उनके लिए संकट खड़ा करेगा, वह उसके लिए संकट बन जाएंगे। कॉन्सर्ट को लेकर मिली धमकियों के बाद सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सतर्कता बढ़ाई गई है। अब 15 नवंबर को होने वाले इस लाइव शो पर सभी की नजरें टिकी हैं। एक तरफ प्रशासन कार्यक्रम को नए नियमों के तहत संपन्न कराने की तैयारी में है, वहीं दूसरी तरफ दिलजीत के बेबाक वीडियो ने उनके प्रशंसकों का उत्साह बढ़ा दिया है।

नहीं रहे यूकेडी के पूर्व विधायक डॉ. नारायण सिंह जंतवाल

हमारे संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड ने अपना एक ऐसा नेता खो दिया, जिसने अलग राज्य के सपने को हकीकत में बदलने के संघर्ष में अहम भूमिका निभाई थी। नैनीताल के पूर्व विधायक और उत्तराखंड राज्य आंदोलन के प्रमुख नेताओं में शामिल डॉ. नारायण सिंह जंतवाल का 66 वर्ष की उम्र में आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की खबर से प्रदेशभर में शोक की लहर है।

जानकारी के अनुसार, डॉ. नारायण सिंह जंतवाल नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए दिल्ली गए थे। इसी दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनका निधन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को नैनीताल लाया जा रहा है। उनके परिवार में पत्नी



सावित्री जंतवाल और दो बेटियां हैं। उनकी पत्नी कुमाऊं विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। डॉ. जंतवाल उत्तराखंड गठन के बाद वर्ष 2002 में हुए पहले विधानसभा चुनाव में नैनीताल सीट से विधायक निर्वाचित हुए थे। वह उत्तराखंड क्रांति दल (उक्रांद) के संस्थापक सदस्यों में शामिल थे। प्रदेश की क्षेत्रीय राजनीति को मजबूत करने और उत्तराखंड के मुद्दों को राजनीतिक मंच पर उठाने में उनकी अहम भूमिका रही। उनका राजनीतिक सफर छात्र राजनीति से शुरू हुआ था। डीएसबी परिसर में उन्होंने छात्रसंघ के उप सचिव, सचिव और अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी निभाई। इसके बाद वह छात्र महासंघ के अध्यक्ष भी रहे।अलग राज्य के संघर्ष में जेल तक जाना पड़ा

डॉ. नारायण सिंह जंतवाल की पहचान केवल एक पूर्व विधायक के रूप में नहीं थी। वह उत्तराखंड राज्य आंदोलन के उन सक्रिय नेताओं में शामिल थे, जिन्होंने अलग राज्य की मांग को लेकर सड़कों पर संघर्ष किया। उनके निधन से उत्तराखंड की राजनीति और राज्य आंदोलन से जुड़े एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व का साथ छूट गया है।

श्री हनुमान जन्मोत्सव पर की गयी विशेष पूजा अर्चना

हमारे संवाददाता

देहरादून। माता वैष्णो देवी गुफा योग मंदिर टपकेश्वर में आज 30 वां श्री हनुमान जन्मोत्सव विशेष पूजा अर्चना, हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाकर संगीतमय सुंदरकांड पाठ, श्री हनुमान चालीसा पाठ, भजन कीर्तन, यज्ञ, प्रसाद वितरण के साथ मनाया गया।

सुबह सर्वप्रथम दक्षिणमुखी हनुमान जी को सिंदूर और चमेली के तेल का चोला चढ़ाया गया और चांदी के बर्क चढ़ाए गए और नए वस्त्र और आभूषण पहनाकर विशेष पूजा अर्चना कर पंडित कमल जोशी और मंडली ने संगीतमय सुंदरकांड पाठ, हनुमान चालीसा पाठ भजन कीर्तन यज्ञ, विशेष आरती और



प्रसाद वितरित किया गया मंदिर के संस्थापक योगाचार्य डा. बिपिन जोशी के पावन सानिध्य में दीपावली मिलन का कार्यक्रम हुवा योगाचार्य डा. बिपिन जोशी ने सभी श्रद्धालु भक्तों को दीपक, खिल, खिलौने, मोमबत्ती, मां लक्ष्मी जी के पैर आदि उपहार में भेंट किए गए।

योगाचार्य डा. बिपिन जोशी ने सबको दीप पर्व दीपावली की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुवे हनुमान जी की निष्काम भक्ति का प्रसंग सुनाते हुए कहा हनुमान जी ही ऐसे देवता हैं जिनका जन्म साल में दो बार मनाया जाता है छोटी दीपावली और चौत्र शुक्ल पक्ष की पूर्णमासी को यह उनकी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी के वरदान का प्रताप है कलयुग में भगवान श्री राम से भी ज्यादा हनुमान जी के मंदिर हैं राम जी ने खुद कहा है हनुमान जी की पूजा ही श्री राम जी तक पहुंचने का सर्वोत्तम मार्ग है।

आज के कार्यक्रम में योगाचार्य डा0 बिपिन जोशी, डा मथुरा दत्त जोशी, राम सेवक शर्मा भगवती जोशी गीता जोशी पंडित संजय जोशी, पंडित हितेश पंत, हर्षपति रयाल, आचार्य आयुष पोखरियाल विजय पाल आदि का विशेष सहयोग रहा।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।